OM 19 a_Page 1 and 2 26/12/2014 12:49 PM Page 1

ओमशान्ति मीडिया

18 जनवरी विश्व शांति दिवस पर विशेष

वर्ष - 15 अंक-19 जनवरी-I, 2015 पाक्षिक माउण्ट आबू ‘8.00

आध्यात्मिकता भारत की पूंजी है- सोलंकी

विश्व के हरेक देश की अपनी अलग-अलग पहचान रही है, लेकिन आज हम देखते हैं कि उनकी वो पहचान नहीं रही। भारत की वही पहचान आज भी सारे विश्व में बनी हुई है, वो है आध्यात्मिकता, जब तक भारत में आध्यात्मिकता है, भारत ज़िन्दा रहेगा। बिना आध्यात्मिकता के मानव पशु समान है। उक्त विचार हरियाणा के स्तर पर खोले जाएं तो सरकार का काम काफी आसान हो जाएगा और आतंकवाद एवं भ्रष्टाचार पर भी नियंत्रण हो जाएगा।

कार्यक्रम में बोलते हुए ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्य सचिव ब्र.कु.बृजमोहन ने कहा कि ये रिट्रीट सेंटर दिल्ली के कोलाहल से दूर आध्यात्मिक एवं प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर है, यहाँ पर आकर हर व्यक्ति सहज ही

कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए राज्यपाल महामहिम कप्तान सिंह सोलंकी। मंचासीन हैं ओ.आर.सी. निदेशिका ब्र.कु. आशा, ब्र.कु. बृजमोहन तथा अन्य।

राज्यपाल महामहिम कप्तान सिंह सोलंकी ने गुड़गांव, बोहड़ा कलां, ओम शान्ति रिट्रीट सेंटर के 14वें वार्षिक उत्सव एवं स्प्रीच्युअल कार्निवल के उद्घाटन अवसर पर व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि ये ईश्वरीय विश्व-विद्यालय नर को नारायण बनाने की सेवा कर रहा है। मैं इनके मुख्यालय माउण्ट आबू भी गया हूँ। वहाँ मैंने राजयोग के अभ्यासकर्ताओं को देखा जिनके चेहरे में शान्ति और पवित्रता की चमक स्वाभाविक ही नज़र आती है। वहाँ के वातावरण में शान्ति और पवित्रता के प्रकम्पन आनेवाले विज़िटर्स को आकर्षित करते हैं। राजयोगी भाई-बहनों से मिलने पर जीवन में सुकून की अनुभूति होती है। वो कहीं अन्यत्र महसूस नहीं होती। अगर इस प्रकार के रिट्रीट सेंटर हमारे देश अथवा विश्व में बड़े मानसिक एवं शारीरिक शान्ति का अनुभव करता है।

ओ.आर.सी. निदेशिका ब्र.कु.आशा ने कहा कि कई लोग समझते हैं कि आध्यात्मिक होना अर्थात् घरबार का त्याग करना। उन्होंने कहा कि अध्यात्म और कर्म दोनों अलग-अलग नहीं हैं, दोनों का समन्वय ही जीवन में सुख, शान्ति एवं शक्ति प्रदान करता है। हमारे इस कार्निवल का उद्देश्य भी यही है कि कैसे परिवारों में पुन: प्रेम एवं सद्भाव का संचार किया जाए। ओ.आर.सी. की संयुक्त निदेशिका ब्र.कु.गीता ने अपने जीवन से जुड़े हुए अनुभवों को सांझा करते हुए कहा कि जब मैं पहली बार ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र पर आई तो मुझे शान्ति का बहुत गहन अनुभव हुआ और पवित्रता की शक्ति का मुझे एहसास हुआ जिसके कारण मैं सम्पूर्ण रूप से यहाँ से जुड़ गई।

इनसाइड पर विशेष ...

सदा शक्तियों को आगे रखने में ही सफलता -पेज 6 पर...

इस असार संसार के सार थे ब्रह्मा बाबा -पेज 3 पर...

रूहानी शहज़ादा ब्रह्मा बाबा -पेज 5 पर...

बाबा ने मुझे उड़ता पंछी बनाया -पेज 7 पर...

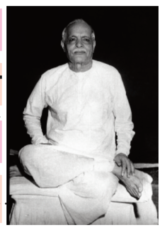

मन-संताप हरने हेतु मानव मसीहा का उदय

ब्रह्मा बाबा, जिनके अव्यक्त आरोहण को 18 जनवरी 2015 को 46 वर्ष पूरे हुए, का साकार जीवन भी अद्वितीय विशेषताओं से भरा हुआ था। नि:संदेह, ईश्वरीय ज्ञान तो उनके मुखारविन्द से शिव बाबा ने दिया परन्तु उस ज्ञान का प्रैक्टिकल स्वरूप बनकर, उसको जीवन के साँचे में ढ़ालकर, उसको सार, विस्तार और व्यवहार का रूप देकर ब्रह्मा बाबा ने ही हमारे सम्मुख रखा। वे ज्ञान के केवल एक प्रवक्ता ही नहीं थे बल्कि जैसे मिश्री मिठास-स्वरूप होती है वैसे ही वे भी ज्ञान-स्वरूप थे। वे योग के कोई प्रचारक नहीं थे बल्कि योगी जीवन के एक साक्षात् उदाहरण थे। ‘योगी जीवन कैसा होना चाहिए?’ – वे केवल इसकी व्याख्या नहीं करते थे बल्कि अपने जीवन को योगमय बना दूसरों को भी योग की मस्ती में मग्न करने वाले थे। वे केवल दिव्य गुणों की धारणा की आवश्यकता पर बल ही नहीं देते बल्कि उनका जीवन दिव्य गुणों का एक ताज़ा गुलदस्ता था। ‘मनुष्य को अपना तन, मन, धन सेवा में लगाना चाहिए’– वह केवल ऐसा कहा नहीं करते थे बल्कि उन्होंने इसे करके दिखाया। उनका हर संकल्प सेवामय था और अन्तिम श्‍वांस तक उन्होंने सेवा ही की और वह भी ऐसी कि जैसा कोई कर नहीं सकता।

शिव बाबा ने तो मनुष्यात्माओं को नये विश्व के निर्माण के लिए नया ज्ञान अथवा नया जीवन-दर्शन दिया परन्तु जन्म-जन्मान्तर से भूली-भटकी और दुर्बल हुई आत्माओं को उस ज्ञानामृत रस से सींचने का कर्त्तव्य ब्रह्मा बाबा ने अथक और अदम्य रूप से किया और इस तरह कि जैसा अन्य कोई नहीं कर सकता। शिव बाबा ने यह समझाया कि पवित्रता ही आत्मा का स्वधर्म है और कि कितने भी सितम ढ़ाये जायें परन्तु इस स्वधर्म को न छोड़ना। इस पवित्रता रूपी महाव्रत में आत्माओं को कायम-दायम (स्थायी रूप से स्थित) करने का एक अति महान कर्त्तव्य ब्रह्मा बाबा ने ही निभाया। आज के दूषित कलयुगी वातावरण में जबकि सभी धर्म और सभी ग्रन्थ यह कहते हैं कि स्त्री-पुरुष में वासना भोग का सम्बन्ध स्वाभाविक है, आदिकाल से चला आया है और ईश्वर-सम्मत है और राम एवं कृष्ण की भी मर्यादा के अनुकूल है, उस वातावरण में नव-विवाहित पति-पत्नी के बीच भी धर्म और आने वाले नवयुग की मर्यादा को स्थापन करना एक ऐसा कठिन मामला था जिसे ब्रह्मा बाबा ही ने हल किया। ऐसी स्थिति में जब वर और वधु के माता-पिता, सास-ससुर और भाई-बान्धव सब उनको पुरानी परिपाटी की पट्टी पढ़ाते, तब बाबा ही की यह कमाल थी कि वे उन्हें काम-ज्वर से पीड़ित न होने देते। वे गृहस्थ की नाव में बैठी उन आत्माओं को योग का ऐसा चप्पु हाथ में दे देते कि उनकी नाव आगे सुरक्षित रूप से बढ़ती जाती। वे उन्हें ऐसा और इतना प्यार दे देते कि उन्हें प्यार का अभाव कभी भी महसूस न होता और दैहिक प्यार एक-दूसरे की ओर न खींचता। वे उन्हें ऐसे नशे का प्याला पिला देते कि जिससे उन्हें जवानी का नशा न चढ़कर रूहानी नशा चढ़ जाता। वे उन्हें लोक-कल्याण अथवा जन-सेवा के कार्य में ऐसा व्यस्त कर देते कि उनकी गृहस्थ भावना सेवा-कामना में परिवर्तित हो जाती। इसका फल यह निकलता

कि लोग जिस कार्य को असम्भव मानते थे, वह केवल बाबा के प्यार-पुचकार से, उनके पत्राचार से, उनकी प्रेरणा और उपहार से सम्भव सिद्ध हो जाता।

मुझे याद है कि आज से 25 वर्ष पहले एक कन्या और एक युवक का सम्बन्ध, जब दोनों के माता-पिता के आग्रह के परिणामस्वरूप, गृहस्थ-मर्यादा में जोड़ा जाने वाला था तो बाबा ने उन्हें यह पत्र लिखकर भेजा कि वे ऐसा पवित्र दाम्पत्य (युगल) जीवन जीकर दिखायेंगे कि जिसके आगे सन्यासी भी झुक जायेंगे। इस पत्र से उन्हें ऐसी प्रबल प्रेरणा मिली, पवित्रता में ऐसा उनका मन जमा कि उन्होंने असम्भव को सम्भव कर दिखाया। केवल एक पत्र ही से नहीं, बाबा ने जो वर्षों तक उन्हें निरन्तर प्यार दिया,

- शेष पेज 3 पर..

OM 19 a_Page 1 and 2 26/12/2014 12:49 PM Page 2

मानव आदर्श व्यवस्था के कर्णधार प्रजापिता ब्रह्मा

कलि के इस विकराल काल में भी अनेक महान् विभूतियों ने समय-समय पर वसुंधरा के आँचल को सुशोभित किया, परंतु उनके चले जाने के बाद पुन: धरती माँ की कोख सूनी हो गई। कुछ ही महान पुरुष ऐसे हुए जो इस जननी को अपना महान उत्तराधिकारी दे सके। उनमें सर्व महान हुए, नवयुग के सृष्टा प्रजापिता ब्रह्मा, जिन्होंने जगत को सहारा भी दिया और धीरज भी बंधाया और अनेक महान वत्स इसके आँगन को प्रफुल्लित करने वाले प्रदान किये जो कि साकार में मानो उनके ही रूप हैं। किसी भी महान व्यक्ति की महानता इस बात से भी आंकी जा सकती है कि वह कितने महान पुरुषों का निर्माण करता है।

- ब्र. कु. गंगाधर

एक मनुष्य को प्रजापिता ब्रह्मा कहना-शायद मनुष्यों के गले न भी उतरता हो, परंतु जो उन्हें जानते हैं, जिन्होंने उनके ब्रह्मा होने के कारणों पर ध्यान दिया हो वे इस सत्य से आँखें नहीं मूंद सकते। वे अनुभव कर सकते हैं कि कैसे पिताश्री भाग्य-विधाता प्रजापिता ब्रह्मा ही थे जिन्होंने इस सृष्टि पर वे आदर्श निर्माण किये जिन्हें अपनाकर मानव देवता और संसार स्वर्ग बन जाएगा। वे इस धरती पर रहकर एक महान ऋषि बने और सर्वश्रेष्ठ कर्मातीत अवस्था को प्राप्त हुए। उन्हीं के अनुभवों के आधार पर यहाँ कर्मातीत अवस्था का उल्लेख किया गया है।

जनवरी मास प्रत्येक ब्रह्मा-वत्स के लिए अंतर्मुखी व एकांतवासी बनने का समय होता है। यह कुछ प्रेरणाएं लेकर आता है और वरदान देकर चला जाता है। जो योगी इस समय का पूर्ण लाभ उठाते हैं वे स्मृति स्वरूप होकर कर्मातीत स्थिति की ओर बढ़ जाते हैं। कर्मातीत अवस्था एक अत्यंत निराली, परम-आनंद युक्त, परमात्मा की समीपता की स्थिति है। तो आओ हम सब पिताश्री के पद् चिन्हों पर चलकर कर्मातीत स्थिति को प्राप्त करें। -**कर्मातीत अवस्था क्या है?**

राजयोग-अभ्यास का लक्ष्य कर्मातीत होना है। राजयोग कर्मों में कुशलता लाकर, कर्मों को दिव्य बना देता है। कर्मातीत अर्थात् कर्मों से अतीत। पिछले 63 जन्मों में प्रत्येक आत्मा ने विकर्मों का जो विपुल भण्डार बनाया है, उसे योगाग्नि में भस्म करके विकर्म-मुक्त होना कर्मातीत बनना है। हम देखते हैं कि प्रत्येक कर्म, उसके संकल्प व उसका चिन्तन या बोझ मनुष्य पर प्रभाव डालता है। परंतु कर्म करते हुए, कर्मों के प्रभाव से परे हो जाना-इसे कर्मातीत अवस्था कहा जाता है। किसी के पास चाहे अथाह धन, सम्पत्ति व वैभव हों और वह उनका प्रयोग भी करता हो परंतु पदार्थों का प्रयोग योगयुक्त होकर करना व पदार्थों का उपभोग अनासक्त होकर करना-ये है कर्मातीत स्थिति। ऐसा न हो कि पदार्थ ही हमारा उपभोग करते रहें। अपने पूर्व जन्मों के व वर्तमान के विकर्मों के कारण मनुष्य अनेक बंधनों में बंधा हुआ है। तन, मन व संबंधों के बंधन उसे चिंतित करते हैं। परंतु कर्मातीत अवस्था पूर्ण बंधनमुक्त अवस्था है। जब मनुष्यात्मा के संपूर्ण बंधन समाप्त हो जाएं, कुछ भी उसे योगयुक्त स्थिति से नीचे न लाए, यही योगी की कर्मातीत अवस्था है। परंतु जैसा कि शास्त्रवादी लोग मानते हैं कि इस मुक्त स्थिति में आत्मा पाप व पुण्य दोनों कर्म से मुक्त हो जाती है, ऐसा ईश्वरीय मत नहीं है। इस मुक्त कर्मातीत अवस्था में विकर्मों का संपूर्ण अभाव व पुण्य कर्मों की संपूर्णता होती है। कर्मातीत अवस्था के समीप पहुँचा हुआ योगी विकर्माजीत बन जाता है अर्थात् उससे कोई सूक्ष्म विकर्म भी नहीं होता और पुण्य कर्म भी वह संपूर्ण अनासक्त भाव से करता है। इन्हीं पुण्य कर्मों का बल उसे कर्मातीत से संपूर्ण बनने में मदद करता है।

पिताश्री ब्रह्मा बाबा ने ऐसी ही श्रेष्ठ कर्मातीत अवस्था को प्राप्त किया। स्मृति-दिवस हमें भी इसी प्रकार बंधन-मुक्त बनने की प्रेरणा देता है। इस कर्मातीत अवस्था के समीप पहुँचकर मन पूर्णतया विरक्त हो जाता है, उसके सभी आकर्षण समाप्त हो जाते हैं और वह निरंतर योग की आनंदकारी स्थिति में स्थित हो जाता है। वे मानव मन की शांति के सुकून-कर्ता थे। उन्होंने मानव-मन में बल भरने के साथ ही स्व ऊर्जा संचारित कर एक आदर्श जीवन व्यवस्था बनाई। ऐसे जीवन प्रणेता को 18 जनवरी विश्व शांति दिवस पर शत् शत् नमन।

बाबा से मैंने सीखा...

मैंने देखा कि वे एक सच्चे पिता थे। उनसे सभी को पिता-पन का आभास होता था। हम उनके द्वारा ईश्वरीय ज्ञान सुनकर उत्पन्न हुए, इसलिए हम उनकी मुख सन्तान कहलाये। उनके अव्यक्त होने के बाद जो उनके बच्चे बने, उनके लिए बाबा प्रजापिता है और जो उन्हें अंत में पहचानेंगे, वे उन्हें जगतपिता कहेंगे। हमें महसूस होता है कि थोड़े ही समय में समस्त विश्व उन्हें जगत पिता मानेगा अपने अनुभवों के आधार पर। मुझे उनसे बार-बार प्रेरणाएं मिलीं कि जैसी भासना हमें बाबा ने दी वैसी ही भासना हम दूसरों को दें। जैसे बाबा ने हमें पालकर बड़ा किया, वैसे ही हम दूसरों को पालना दे बड़ा करें। भले ही हम जगत पिता तो नहीं हैं, परंतु हैं तो उनके ही महान बच्चे...

दूसरी मुख्य बात-मैंने बाबा में देखी कि बाबा में तनिक भी कर्त्तापन का भान नहीं था। बाबा सदा कहते थे कि सब कुछ शिव बाबा ही करता है या बच्चे करते हैं। अपने को सदा ही छिपाये रखा व बच्चों को स्वमान देना-यही महानता हमने बाबा से सीखी। मुझे इस बात का सदा ख्याल रहता है कि कर्त्तापन का तनिक भी भान न आये।

हमें बाबा ने सिखाया कि शिव बाबा से ईमानदार कैसे रहना चाहिए। सम्पूर्ण सम्पत्ति का, चाहे वह उनकी स्वयं की थी या अन्य आत्माओं ने यज्ञ में दी थी वे उसके सम्पूर्ण ट्रस्टी थे। यही विशेषता उन्होंने हमें सिखाई। इसी ईमानदारी से हमारा सारा व्यवहार सरल हो गया, हम भगवान के समीप आ गये और हमारी अधीनता भी समाप्त हो गई।

मैंने ज्ञान मंथन करने की मुख्य विशेषता बाबा से सीखी। शिवबाबा के ज्ञान पर मंथन कैसे करें ताकि अपनी बुद्धि का ज़रा भी अहंकार न रहे? -यह बाबा में प्रत्यक्ष देखा।

बाबा ने हमें सिखाया कि आपस में अलौकिक वातावरण कैसा होता है, अलौकिक भाषा कैसी होती है तथा अलौकिक संबंध कैसा होता है। जब भी बाबा के पास जाते-ये तीनों बातें स्पष्ट देखने में आती थीं। बाबा के पास किसी भी तरह की लौकिकता नज़र नहीं आती थी। वास्तव में लौकिकता से दिव्यता मिस हो जाती है। बाबा ने हमें सिखाया कि हम संसार में कैसे रहें, शिव बाबा से कैसे रहें, अपने से कैसे रहें, अपने को कैसे रखें, अपना स्वमान कैसे रखें। रूहानियत भी हो और नारायणी नशा भी हो।

बाबा को सदा ही हमने पूरी अथॉरिटी में देखा। परिस्थितियों में बाबा कहते थे कि तुम डरो नहीं। सब बाबा के ही बच्चे हैं। इस प्रकार बाबा ने हमें अति निर्भय बना दिया। बाबा अपनी एनर्जी वेस्ट नहीं होने देता था। सदा यही संकल्प रखता था कि मेरी एनर्जी सभी को मिलती रहे। बाबा अन्दर ही अन्दर शिव बाबा से एनर्जी खिंचते रहते थे। मुझे कभी-कभी सोलह-सोलह घंटे भी कार्यक्रमों में रहना पड़ता है, परंतु मुझे नहीं लगता कि मेरी एनर्जी नष्ट हो रही है। सदा शक्ति बढ़ने का ही अनुभव रहता है। इसी तरह जब मैं किसी बड़े प्रोग्राम में होती हूँ, तो मुझे कभी हीन भावना नहीं आती।

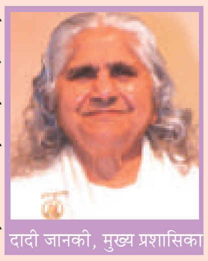

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

टॉपिक चाहे कैसा भी हो, जब तक दूसरे वक्ता भाषण करते हैं, मैं योग-युक्त होकर साइलेंस की शक्ति इकट्ठी करती रहती हूँ। यद्यपि मैं उनकी भाषा नहीं समझती, तो भी मुझे ये ख्याल नहीं आते कि इन्होंने क्या बोला या मैं अच्छा बोलूं, पता नहीं इन्हें अच्छा लगेगा या नहीं? मुझे इस तरह की कोई भी उलझन नहीं होती। मैं अपनी श्रेष्ठ स्थिति में रहती हूँ और सब कुछ श्रेष्ठ होता है। सेवा के लिए बाबा ने हमें बहुत कुछ सिखाया। समानता में रहने का बीज डाल दिया, हिम्मत से भरपूर कर दिया, आध्यात्मिक शक्ति भर दी जो कि आज विश्व सेवा में काम आ रही है। आज दुनिया में अनेक आत्माएं सत्य की प्यासी हैं, हमें रहता है कि इन्हें कुछ दें।

सेवा में मैं निमित्त बने हुओं का अधिक ध्यान रखती हूँ, यही बाबा से सीखा है। मैं ही करूं-यह संकल्प कम रहता है। बाबा ने कूट-कूट कर भर दिया है कि सेवा में अनासक्त वृत्ति ही सफलता का आधार है। जो हुआ वो भी याद नहीं, जो होगा उसकी भी चिन्ता नहीं। सेवा के लिए मन में उलझन नहीं, उमंग अवश्य है। संशय भी नहीं रहता कि सफलता होगी या नहीं। मुझे कभी फल देखने की इच्छा नहीं होती कि हमने जो सेवा की उसका फल क्या निकला। बाबा ने सिखा दिया कि डाला हुआ बीज कभी निष्फल नहीं जाता। ऐसे सच्चे पिता पर ये मन कुर्बान है।

साइड सीन को साइड कर आगे बढ़ो

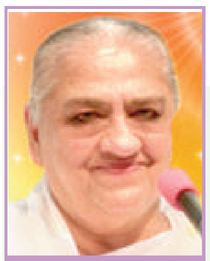

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

सेवाधारी जब सेवा कर रहे हैं तो सेवाधारी माना ही निरहंकारी। लेकिन होता क्या है, जब सेवा में या कोई काम में बिज़ी हो जाते हैं तो उस सेवा का अर्थात् कर्म का प्रभाव हलचल में ले आता है। उस तरफ, उन्हीं बातों में अटेन्शन ज्यादा चला जाता है और जो मन्सा हमको पॉवरफुल रखनी है उसमें कमी हो जाती है। तो यह हमको बैलेन्स रखना पड़ेगा। मन्सा, वाचा और कर्मणा तीनों में अगर हमारा बैलेंस होगा तो जहाँ बैलेंस है वहाँ ब्लैसिंग है ही क्योंकि अगर बाबा की ब्लैसिंग लेनी है तो हम जो भी सेवा करते हैं, अपने पुरुषार्थ अनुसार जितनी अवस्था होती है उतना करते हैं। लेकिन हर कार्य में हमें बाबा की ब्लैसिंग भी हो, उसके लिए हमको इन तीनों ही स्टेज का बैलेंस रखना पड़ेगा। इस बैलेंस से ही ब्लैसिंग मिलेगी और ब्लैसिंग से क्या नहीं हो सकता है! दुनिया वाले तो कहते हैं भगवान अगर चाहे तो क्या नहीं कर सकता है। वह तो कहते हैं मुर्दे को ज़िन्दा कर सकता है लेकिन हम समझते हैं जो माया से मूर्छित वा मुर्दे हुए पड़े हैं, उन्हों को तो ज़िन्दा कर ही सकते हैं। तो इस बात पर हमको थोड़ा सा और अटेन्शन देना चाहिए। बाकी समस्यायें तो आयेंगी और भी आगे चलकर बढ़ेंगी, कम नहीं होनी है। ऐसे नहीं थोड़ी हलचल होगी तो वैराग्य आयेगा और समस्यायें कम हो जायेंगी। फिर दूसरे प्रकार से आयेंगी। जो अभी आती हैं उस रूप की नहीं, लेकिन दूसरे रूप से आयेंगी। एक पेपर होता है 3 मास का, दूसरा 6 मास का और फिर होता है फाइनल पेपर। तो लास्ट फाइनल पेपर होना ही है। तो समस्याओं को ऐसे ही समझना चाहिए कि यह तो हमको पास करनी ही है। यह साइडसीन हैं। आप मंज़िल पर चल रहे हैं, उसमें साइडसीन होवे ही नहीं, यह हो सकता है! कहाँ से भी जाओ लेकिन सब सीन तो होंगे ही। तो अगर हमको मंज़िल पर पहुँचना है, सम्पूर्ण बाप समान बनना है तो साइडसीन आयेंगे। लेकिन बाबा कहते तुम तूफान को तूफान नहीं समझो, तोहफा समझो तो बहुत मज़ा आयेगा क्योंकि जो भी समस्या आती है वह हमको ज़रूर कोई पाठ पढ़ाकर जाती है। ज्यादा से ज्यादा तो ग्लानि का ही असर आता है, समझो कोई ग्लानि करता है, बात हुई नहीं, मैंने ठीक किया। लेकिन दूसरा मुझे पूरा ही गलत मानकर कहता है कि तुम तो हो ही गलत। तो ऐसी समस्यायें जब आती हैं तो अंदर से आता है कि यह झूठ क्यों बोलता है, यह मिसअण्डरस्टैन्ड क्यों करता है! संगठन में यही थोड़ा बहुत आता है। बाबा तो कहता है ग्लानि जो करे, उसको गले लगाओ। कहाँ ग्लानि और कहाँ गले लगाओ, इसमें चाहिए सहनशक्ति। वह गाली दे और हमें अंदर जोश भी न आये, ऐसे टाइम पर ही मुझे सहनशीलता काम में लानी है। बड़ी बात को छोटा करने के लिए इस सहनशीलता के पेपर में पास होना पड़ेगा। इस पेपर को पास करने का मन में संकल्प हो तो किसी के प्रति घृणा भी नहीं आयेगी और पेपर में सहज पास भी हो जायेंगे क्योंकि जब मिसअण्डरस्टैन्डिंग होती है तो जोश आता है। मैं सिद्ध करूँ कि मैं रॉंग नहीं हूँ। चलो और कुछ न करूँ लेकिन यह तो उसको साबित करूँ कि मैं राइट हूँ, तुम रॉंग हो। लेकिन रॉंग वाला कभी अपने को रॉंग नहीं समझता है क्योंकि उस समय वर परवश होता है। इसीलिए बाबा ने कहा है तूफान को तोहफा समझो। समस्याओं से घबराओ नहीं। जिसमें सहनशक्ति होगी वह जोश में नहीं आयेगा। सहनशक्ति से निर्णय कर सकेंगे। नहीं तो वह निर्णय भी ठीक नहीं होता है।

OM 19 a_Page 1 and 2 26/12/2014 12:49 PM Page 3

इस असार संसार के सार थे ब्रह्मा बाबा

- ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

ब्रह्मा बाबा, जिनको अव्यक्त हुए अब 46 वर्ष हो चले हैं, की प्रतिभा बहुमुखी थी। उनके व्यक्तित्व का एक विशेष पहलू यह था कि कोई बच्चा हो या बूढ़ा, धनवान हो या निर्धन, विद्वान हो या अशिक्षित, जल्दी ही उनकी निकटता का अनुभव करता था। हरेक को ऐसा अनुभव होता था कि बाबा के मुखारविन्द से जो शब्द विनिमृत हो रहे हैं, वे आत्मीयता और अपनत्व को लिए हुए हैं। उनमें औपचारिकता कम है परंतु शिष्टता-युक्त स्नेह अधिक। कितना भी कोई कमर कस कर उनके पास आता, वह उनके स्नेह से घायल हुए बिना न लौटता। वह बाबा से दोबारा अथवा बार-बार मिलने की इच्छा मन में लेकर जाता। बाबा का प्यार पत्थर को भी पिघला कर पानी बना देता और तपत का ताप बुझाकर उसे शांति और शीतलता प्रदान करता, उनके पास बैठकर, उनसे मिलकर, उनके वचन सुनकर ऐसा लगता कि इस बेगाने संसार में हमने यहाँ ही अपनापन पाया है। एक यही जगह है जहाँ कृत्रिमता नहीं बल्कि वास्तविकता है और जिसके वचन हम सुन रहे हैं, उसके मन में एक ऐसा प्यार और दुलार है जो इस विशाल संसार में ढूंढने पर भी अन्य कहीं नहीं मिल सकता। वह प्यार मन में इतना गहरा उतर जाता कि उसकी गहराई समुद्र से भी अधिक और उसकी छाप एक अमिट स्याही के ठप्पे की छाप से भी अधिक अमिट बन जाती। उनके वचन एक ऐसा प्रसाद का रूप थे जो सचमुच मन की चंचलता को हर लेते और आत्मा में मिठास भर देते। इसी प्रसंग में देहली के एक व्यक्ति के वृत्तांत का उल्लेख करना समुचित होगा। वह बाबा का कट्टर विरोधी था। उसका कारण यह था कि उसकी धर्मपत्नी ईश्वरीय सेवाकेन्द्र में आती थी और वह उस सपत्नीक जीवन में भी ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करने में सुदृढ़ थी। वह व्यक्ति समझता था कि बाबा ने उससे कुछ छीन लिया है और उसको भोग-सुख से वंचित किया है। अत: उसके मन में बाबा के प्रति घृणा, वैर, द्वेष और रुष्ट भाव था। एक बार जब बाबा देहली में आये तो उसे मालूम हुआ कि जिस ईश्वरीय सेवाकेन्द्र पर उसकी धर्मपत्नी जाती है, वहाँ से एक बस प्रात: 4.00-4.30 बजे क्लास के भाई-बहनों को लेकर वहाँ क्लास के लिए जाती है, जहाँ बाबा ठहरे हुए हैं। एक दिन यह सोचकर कि वह भी उस बस के द्वारा वहाँ पहुँचकर बाबा से झगड़ा करेगा। प्रात: ही अपनी धर्मपत्नी के पीछे-पीछे आते हुए, धर्मपत्नी के मना करने पर भी केन्द्र पर पहुँचकर उस बस में बैठ गया। सभी ने बहुत प्रयत्न किये उसे क्लास में न ले जाने के और बाबा से दूर रखने के, क्योंकि सभी उसके स्वभाव से वाकिफ थे, लेकिन लाख कोशिशों के बावजूद भी वह क्लास में आ ही गया।

वह वहाँ क्लास के अंत में जाकर बैठा परंतु बैठने के बाद वहाँ से हिला नहीं। क्लास के सारा समय उसने गर्दन भी नहीं हिलाई। वह बाबा को एकटक होकर देखता ही रहा और सुनते-सुनते मंत्रमुग्ध हो गया। क्लास के बाद जब उसे उठने के लिए कहा गया तब वह उठता ही नहीं था। उसकी आँखें इतनी गीली थी कि आँसू टपकने को आ रहे थे। बाबा से लड़ने की बजाय वह अपनी पत्नी को उलाहना देने लगा। वह बोला, बाबा तो अस्सी साल का जवान है! कितना खूबसूरत है बाबा! कैसे सीधे बैठते हैं! तू अब तक पवित्रता की ही बात मुझसे कहती रही और ऐसे बाबा के बारे में तो कुछ बताया ही नहीं। मैं बाबा से मिलकर आऊँगा। वह टोली लेने के लिए बाबा की ओर बढ़ा, बाबा ने उसे पुचकारते और मुस्कुराते हुए टोली दी और वह ऐसा खुश हो गया कि उसे भी अपना बाबा मिल गया।

इसके अलावा बाबा की विशेषताओं में से एक विशेषता थी कि वे ज्ञान को सम्पूर्णता से समझने और समझाने के प्रयत्न केवल लिखित सामग्री ही के द्वारा नहीं करते थे बल्कि जब कहीं सम्मेलन या प्रवचन आदि होता, उसमें भी बाबा तीन प्रकार की सम्पूर्णता की ओर ले जाने का सदा विशेष प्रयास कराते रहते। एक तो बाबा इस ओर ध्यान खिंचवाते कि वक्ता की अपनी स्थिति पवित्र और योग-युक्त होनी चाहिए। इसे वे यों समझाते कि जैसे तलवार का जौहर होना ज़रूरी है, ऐसे ही पवित्रता और योग-युक्त स्थिति ज्ञान-रूपी तलवार का जौहर है। दूसरा वे इस ओर ध्यान खिंचवाते कि प्रवचन में कौन-कौन सी बात बताना ज़रूरी है। इसका स्पष्टीकरण करते हुए वे समझाते कि जैसे कोई अच्छा वकील ऐसा नुक्ता बता देता है कि जिससे बात जज की समझ में आ जाती है और जो जज पहले फांसी की सजा देने की बात सोच रहा था, वह अब अपराधी को मुक्त करने का निर्णय करता है। वैसे ही ज्ञानवान व्यक्ति को भी ऐसी-ऐसी बात सुनानी चाहिए कि पापी, पतित या अपराधी व्यक्ति की बुद्धि में वह ऐसी बैठ जाए कि पहले जहाँ वह भोग-विलास के जीवन की ओर प्रवृत्त था अब वह उससे मुक्त होने की बात का निर्णय करता है। बाबा कहते कि वकील को अगर समय पर प्वाइंट याद नहीं आयेगी और वे जज के आगे कुछ नहीं रखेगा तो अपराधी अपना मुकदमा हार जाएगा और दण्ड का भागी होगा। यहाँ तक कि हो सकता है, उसे मृत्युदण्ड भी भोगना पड़े। अर्थात् वकील की छोटी-सी गफलत से कितना नुकसान हो सकता है। इसी प्रकार ज्ञानवान प्रवक्ता अगर भाषण के समय आवश्यक बातें कहना भूल जाता है तो सुनने वाले लोग विषय-विकारों में गोता लगाए दु:ख-दंड के भागी बनते रहते हैं। तीसरा, वे इस बात की ओर ध्यान दिलाते कि बात समझाने की विधि क्या हो। केवल बात ही ज़रूरी नहीं होती, बात करने का तरीका भी महत्वपूर्ण होता है। बात कहना भी एक कला है। उस पर ध्यान देना, उसका अभ्यास करना, उसमें सम्पूर्णता लाना भी ज़रूरी है। इस बात को समझाते हुए वे कहते कि डॉक्टर जब किसी को टिंक्चर आयोडीन लगाता है तब वह उसे साथ-साथ सहलाता भी है, फूंक भी मारता है। जब कोई सर्जन किसी का ऑपरेशन करता है तो वह उसे क्लोरोफॉर्म सूंघाता है ताकि उसे दर्द न हो। जब कोई इंजेक्शन लगाता है, तब वह पहले सूई को ऊबलते पानी में डाल कर कीटाणु-रहित और संक्रमण-रहित करता है। इस प्रकार बाबा समझाते-दूसरों को सम्मान देते हुए तथा स्नेह और मर्यादा युक्त, शुभ और कल्याण की भावना से, अनुभव, निश्चय और ओज की भाषा से समझाना चाहिए, तब जाकर वह तीर ठिकाने पर लगता है। इस प्रकार बाबा हर प्रकार से ज्ञान एवं योग के महत्व को समझाते थे। ऐसे बाबा को भूलना संभव नहीं।

मन-संताप हरने...पेज 1 का शेष

उन्हें सेवा का उपहार दिया, वह अन्य कोई नहीं दे सकता। उनकी तथा उन जैसे अनेकों युगलों की ज़िम्मेवारी लेकर कदम-कदम पर उन्हें मार्ग-प्रदर्शना देना, उनका उत्साह बनाये रखना, उन्हें मंज़िल की ओर आगे बढ़ाते चलना, उन्हें अनेक प्रकार के आँधी-तूफानों से पार करना, उनके जीवन को नीरस न होने देना, उन्हें एक ऐसा लक्ष्य देना कि जिसमें वे निरन्तर लगे रहें और उनके कुल जीवन को योग के साँचे में ढाल देना, यह कोई आसान काम नहीं है। ऐसे सैकड़ों और हज़ारों विवाहित, अविवाहित और नवविवाहित लोगों को पवित्रता के पद पर आसीन करके उन्हें लौकिक से अलौकिक बना देना एक ऐसी मेहनत का काम है कि जिसे न अन्य कोई कर सकता है और न ही कोई अपने सिर पर लेगा। एक-एक वत्स पर ब्रह्मा बाबा ने जितनी मेहनत की, जितना ध्यान दिया, जितना प्यार बरसाया और अपना जितना तन, मन, धन लगाया, वह संसार के इतिहास में न आज तक किसी ने किया है और न कोई कर सकता है। जिन्होंने उनके इस करिश्मे को देखा है, जिनका अपना जीवन उस प्यार से सींचा गया है, केवल वे ही इस सौभाग्य के साक्षी दे सकते हैं। अन्य जो आज थोड़े समय के लिए सम्मेलनों और उत्सवों में उन वत्सों के सम्पर्क में आते हैं, जिनमें बाबा ने ज्ञान-योग-धारणा-सेवा त्याग रूपी पंचामृत भर दिया है, वे उन वत्सों के ज्ञान या प्रेम या धारणा या सेवा आदि से प्रभावित तो होते हैं परन्तु शायद वे इसका अंदाज़ा नहीं लगा सकते कि ब्रह्मा बाबा ने 63 जन्मों से थकी-मांदी और गुमराह हुई आत्माओं को कैसे राह पर लगाकर, उनके विकारों की तपत बुझाकर उन्हें नई दुनिया का आदर्श बनाने की अवर्णनीय मेहनत की होगी। 18 जनवरी विश्व शांति दिवस पर ऐसे आध्यात्मिक पुरोधा को शत:शत: नमन।

धार। कलेक्टर जयश्री कियावत को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सत्या। साथ हैं जी.प.सी.ओ. श्रीकान्त जलोर, डॉ. लता चौहान, ब्र.कु. राधा तथा अन्य।

मुम्बई-विक्रोली। नवनिर्वाचित विधायक सुनील राऊत को गुलदस्ता भेंट कर अभिनंदन करते हुए ब्र.कु. निलिमा।

पटनागढ़। के. सुदर्शन चक्रवर्ती,सब कलेक्टर,आइ.ए.एस. की ओर से ईश्वरीय प्रसाद स्वीकार करते हुए ब्र.कु. सुजाता।

मोगा-पंजाब। गोपाल कृष्ण इंडस्ट्रीज़ की मैनेजिंग डारेक्टर श्रीमती इन्द्र पुरी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. संजीवनी। साथ हैं देवीदास चैरीटेबल ट्रस्ट के सदस्य वीरेन्द्र कौड़ा, शास्त्री जी तथा ब्र.कु. भाई-बहन।

जशपुर नगर। चैतन्य देवियों की झाँकी के उद्घाटन पश्चात् विधायक राजशरण भगत को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. नीलम। साथ हैं ब्र.कु. रुकमणि।

हाथरस। भजन संध्या कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए जिलाधिकारी शमीम अहमद, डॉ. राम अवतार शर्मा,पूर्व कुल सचिव,आगरा वि.वि., ब्र.कु. सीता तथा अन्य।

OM 19 a_Page 1 and 2 26/12/2014 12:49 PM Page 4

वैंगलोर। कर्नाटक के राज्यपाल महामहिम वजुभाई रुदाभाई वाला को ईश्वरीय सौगात भेंट करने के बाद समूह चित्र में ब्र.कु. सविता।

आजमगढ़। नवनिर्मित सेवाकेन्द्र 'आध्यात्मिक जागृति भवन' का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. सुरेन्द्र, वरिष्ठ जेल अधीक्षक ए.के. मिश्रा, सी.जे.एम. कविता मिश्रा, ब्र.कु. मधु, ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. रंजना, ब्र.कु. विमला तथा ब्र.कु. दीपेन्द्र।

वैंगलोर। यातायात प्रभाग की ओर से आयोजित 'सेफ्टी थ्रू स्पीरिचुअल लाइफ स्किल्स' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए एस. मनोहर,चीफ लॉ ऑफिसर,के.एस.आर.टी.सी, के.एम. ऑराधकर,चीफ लेबर ऑफिसर, ब्र.कु. मृत्युंजय, ब्र.कु. अम्बिका तथा अन्य।

धमतरी-छ.ग.। सड़क दुर्घटना में जीवन गंवाने वालों तथा शोक संतप्त परिवारों को मानसिक सम्बल देने हेतु आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. सरिता। साथ हैं रामेश्वर साहू,धमतरी रोडवेज़, इंदरजीत सिंह थिंद,पूर्व अध्यक्ष,ट्रक यूनियन, श्रीमती देवबदी दरियो,यातायात प्रभारी तथा कामिनी कौशिक।

हाथरस। व्यसनमुक्ति कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. शान्ता। साथ हैं इन्दिरा जायसवाल व अन्य।

गोधरा-गुज.। 'सात अरब सत्कर्मों की महायोजना' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. नरेन्द्र, ब्र.कु. मीता, शिक्षा क्षेत्र के अग्रणी शरद कुमार शाह, ब्र.कु. सुरेखा, ब्र.कु. मृत्युंजय, ब्र.कु. डॉ. निरंजना, आर.बी. कार्स मारूती के अधिकृत डीलर रमेश पटेल, ब्र.कु.शिविका तथा ब्र.कु. रतन। सभा में उपस्थित हैं शहर के गणमान्य जन।

शरीर रचना और दूध

सदा स्वस्थ जीवन

स्वर्णिम आहार से सम्पूर्ण स्वास्थ्य की ओर

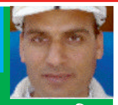

ब्र.कु. ललित
शांतिवन

1. शिशु का पाचन तंत्र दूध के पाचन के लिये अधिक अनुकूल होता है, जबकि तरुण एवं उससे बड़ी उम्र के व्यक्ति के लिए ठोस आहार का अच्छे प्रमाण में होना ज़रूरी होता है। दाँत के निकलने को एक कुदरती संकेत माना जा सकता है। दाँतों का फूटना यह सूचित करता है कि अब पेय पदार्थ के बदले ठोस आहार लेने का समय आ गया है। दूध के पाचन के साथ यकृत (&#,) का सीधा संबंध है। शिशु का यकृत बड़े लोगों के यकृत की तुलना में 3 गुना बड़ा होता है, ऐसा कहा जा सकता है। उदाहरण के रूप में 7 पौंड वज़न वाले शिशु के शरीर में यकृत का वज़न यदि आधा पौंड हो तो 21 पौंड के बालक के शरीर में भी लगभग उतना ही – अर्थात् आधा पौंड ही होगा। शिशु के जठर का पाचक रस क्षारीय होता है, जिससे दूध का दही बन जाता है और अच्छा पाचन होता है। पुख्त उम्र के व्यक्ति के जठर में पाचक रस अम्लीय होता है जिससे दूध फट जाता है और पाचन अच्छी तरह नहीं होता। शिशु का जठर और आँतों के ऊपर का भाग लगभग सीधी नली जैसा होता है जिसमें दूध सरलता से आगे बढ़ता है। बड़े होने पर जठर थैली के रूप में हो जाता है जिसमें दूध अटक जाता है। जठर जितना ज्यादा फैला हुआ होगा दूध का पाचन उतना ही कठिन बनता है। शिशु में दूध के पाचन और उसे आगे धकेलने की प्रक्रिया बड़े लोगों की तुलना में शीघ्र होती है। 2. इससे स्पष्ट होता है कि बड़ों के लिये दूध का आहार के रूप में उपयोग करना हितकारी नहीं है। कुछ परिस्थितियों में दूध पित्त-विकृत, खमीर और कब्ज पैदा करता है। गाय के दूध में केसिनोजिन अथवा केसिन (Caseinogen OR Casein) नामक प्रोटीन 85% होता है। उसका पाचन काइमोसिन (Chymosin) नामक पाचक रस द्वारा होता है। काइमोसिन बालकों के जठर में होता है, बड़ों के जठर में नहीं होता है। यह भी कुदरत का एक अतिरिक्त संकेत है कि दूध बड़ों के लिये योग्य आहार नहीं है। रूड़की (हरिद्वार) की रश्मि बहन पिछले 2 वर्षों से गठिया की बीमारी से परेशान थी। स्वर्णिम आहार पद्धति के प्रयोग से अभी ठीक हो गया है और वज़न भी 10 किलो कम हुआ है। तो आइये, स्वर्णिम आहार पद्धति को अपनाकर सदा स्वस्थ जीवन का ईश्वरीय जन्म सिद्ध अधिकार प्राप्त करें।

M - 07791846188
healthywealthyhappyclub@gmail.com
संपर्क करें केवल 1pm से 3pm के बीच में

हे आत्मा तुम जहां रहो, खुश रहो...

प्रश्न:- हम स्वयं के लिए स्वयं का ध्यान रखें या नहीं, लेकिन उस आत्मा की शांति के लिए अपना ध्यान तो रखना ही होगा जिसके लिए हम जीवनभर वैसे ही करते आये हैं।

उत्तर:- जो हमारे लिए इतने महत्वपूर्ण थे उनको इतना दर्द पहुंच रहा है। अगर बच्चा थोड़ा बड़ा हो जाता है तो वो हमें याद नहीं रखता है, भूल जाता है। लेकिन ऊर्जा जो हम भेज रहे हैं उस ऊर्जा को वो फिर भी ग्रहण कर रहा है। ऊर्जा ऐसी चीज़ है, आप जिसके प्रति उत्पन्न करेंगे, वो उस तक ज़रूर पहुंचती है।

प्रश्न:- वो आत्मा जिसने जहां जन्म लिया है उस तक वो वायब्रेशन्स पहुंच रहे होंगे?

उत्तर:- जरूर। आप मेरे लिए जो भी ऊर्जा उत्पन्न करोगे, वह मुझ तक पहुंचेगी ही।

प्रश्न:- इसका मतलब है कि वहां उस बच्चे को दर्द की अनुभूति होती होगी?

उत्तर:- हमारे अंदर आज इतनी क्षमता नहीं है कि हम स्वयं की रक्षा कर सकें। हमने ये देखा कि आपने दर्द भेजा और मैं दर्द में चली जाती हूँ। जब हम उन सब लोगों की ऊर्जा से प्रभावित हो जाते हैं जो हमारे आस-पास हैं, अगर कोई कहीं और भी है, लेकिन वो जो एनर्जी भेज रहे हैं उसका भी प्रभाव हमारे ऊपर पड़ता है और उस आत्मा पर भी पड़ता है।

प्रश्न:- जब वो सामने हो तो मुझे समझ में आता है कि ये इसकी ऊर्जा आ रही है या उसकी ऊर्जा आ रही है। लेकिन उस बच्चे को तो पता ही नहीं है कि वो ऊर्जा कहां से आ रही है?

उत्तर:- इसके कारण वह बच्चा बहुत ही दु:ख-दर्द की ऊर्जा को ले रहा है। एक माता पिता या पति पत्नी, जो भी हम हैं यहां पर हमें मालूम है, हम अपने आपको तो ये कह देते कि हमें खुश रहने का कोई हक नहीं है। हम खुश रहना नहीं चाहते क्योंकि अब आप जितनी बार दर्द उत्पन्न करेंगे, अपने को तो देंगे ही, साथ-साथ उस बच्चे को भी भेजेंगे। अगर बच्चा कहीं और है और वो हमें दूसरे शहर से फोन करता है, और पूछता है कि घर पर सब कुछ ठीक है, हम क्या कहते, हाँ...हाँ...सब ठीक है, हो सकता है यहां पर दस समस्याएं हों। हम बच्चे को कभी नहीं बताते तो इसके पीछे हमारा क्या उद्देश्य होता है? दूसरा जहां है, वो वहां सेट हो जाये। अगर यहां की सारी बात हम उसको बताते रहेंगे तो वो वहां कैसे सेट होगा।

उसी प्रकार से अब वो आत्मा दूसरी जगह है। हमारी शुभ-भावना क्या होनी चाहिए कि वो जहां है, वहां पर अच्छी तरह से सेट हो जाये। आपको मालूम है कि हम रोज़ क्या मैसेज भेजते हैं।

प्रश्न:- वास्तव में इसमें हमारा स्वार्थ होता है।

ब्र.कु. शिवानी

उत्तर:- जहां हमने कहा कि वे चले गये हैं तो फिर हमें यह पता नहीं था कि वो अभी हैं। हमने कहा वो तो चले गये।

प्रश्न:- वो तो मेरी ज़िंदगी से चले गये। इसका मुझे बहुत दु:ख है।

उत्तर:- लेकिन वो है।

उसी प्रकार से बच्चा दूसरे शहर में है यहां नहीं है।

प्रश्न:- ये तो मैं मान ही नहीं पाती हूँ कि बच्चा हमारे पास नहीं है। मृत्यु के बाद क्या होता है और क्या नहीं होता है इसको लेकर के इतना संशय है और भ्रम है फिर इसको लेकर के इतनी सारी मान्यताएं हैं। तो मैं ये कैसे स्वीकार कर लूं कि वो है?

उत्तर:- जब हमें ये समझ में आ गया कि हम आत्मा हैं और आत्मा का विनाश नहीं होता है फिर तो वो है ही। आत्मा एक रूप छोड़कर दूसरे रूप में जाती है।

प्रश्न:- इससे जुड़ी हुई बातों में इतना संशय है कि हम कहीं न कहीं और चीज़ों में चले जाते हैं। उसने शरीर लिया कि नहीं लिया, वो यहीं है कि नहीं है और कई बार हम कुछ और ही सोच लेते हैं।

उत्तर:- कई बार हम उस आत्मा से जुड़ने की कोशिश भी करते हैं। अब यह करना सही है या गलत है? जितना हम उसको यहां खींचने की कोशिश करते हैं, उतना उस आत्मा को वहां दर्द होता है। हम असंभव कार्य को संभव करने की कोशिश कर रहे हैं। हमारे कुछ भी करने से अगर वो वापिस इस शरीर में आ जाये, वो तो होने वाला नहीं है। लेकिन हम बार-बार उसको यहां जोड़ने की कोशिश करते हैं और उसके लिए आजकल बहुत सारे तरीके अपनाये जाते हैं। जब वो यहां आ नहीं सकते, हमें उनको क्या करने देना है। जिन बच्चों को पांच वर्ष की आयु में अपना पिछला जन्म याद आ जाता है तो वो वर्तमान को तो छोड़ नहीं सकता। वो आत्मा वर्तमान जन्म और पिछले जन्म के बीच में खिंचता रहता है। हमें अपना पिछला जन्म भूल जाना चाहिए क्योंकि यह प्रकृति का नियम है। जो नहीं भूल पाता है उसके साथ जीवन में बहुत टकराव होता है।

इसी तरह वो आत्मा दूसरी जगह चली गई मतलब वो वहां सेटल हो गई। अगर हम उसको इस तरह से यहां खींचने की कोशिश करेंगे वो तो नहीं होगा। मान लो बच्चा दूसरे शहर में है और हम उसको फोन करके बोलें कि वापिस आ जाओ, तुम्हारे बिना तो हमारा मन ही नहीं लग रहा, हम क्या कभी ऐसा बोलेंगे! हम तो यही कहेंगे कि यहां सब ठीक है आप वहीं अच्छे से रहो। उसी प्रकार से आत्मा कहीं दूसरी जगह चली गई है। हम क्या सोचते हैं क्यों छोड़कर चले गये, तुम्हारे बिना तो मैं जी नहीं सकती, अब मुझे जीना ही नहीं है।

अमरेली। 'स्वर्णिम संस्कृति जागृति अभियान' का उद्घाटन करते हुए कालु भाई पंसुरिया,नगर पालिका अध्यक्ष, हर्षद चन्द्राना, ब्र.कु. तृप्ति, ब्र.कु. दयाल, ब्र.कु. सतीश, ब्र.कु. भावना, ब्र.कु. गीता तथा अन्य।

OM 19 a_Page 1 and 2 26/12/2014 12:49 PM Page 5

रूहानी शहज़ादा-ब्रह्मा बाबा

-ब्र.कु. निर्वैर, महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़

आत्मीयता मनुष्य का सर्वश्रेष्ठ आभूषण है, सर्वश्रेष्ठ व्यक्तित्व है और वर्तमान काल में अनेकानेक आत्माओं को राहत प्राप्त कराता है। पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा बाबा से हर आत्मा को साकार मिलन में सदा उस आत्मीयता का अविस्मरणीय अनुभव प्राप्त होता, जो एक बार मिलन के पश्चात् सदा के लिए उस चुम्बकीय व्यक्तित्व की ओर झुक जाती अथवा उनके संग के आत्मीय रंग में रंग कर अपने आप को धन्य-धन्य महसूस करती। जुलाई 1959 में जब पहली बार बाबा से मधुबन में मिला, मुझे उनकी असीम आत्मीयता और अपनेपन का आभास हुआ और मन में सदा ही उनके अति समीप व अंग-संग रहने की प्रबल इच्छा रही, क्योंकि उनकी रूहानियत के शक्तिशाली व्यक्तित्व ने मुझे पहली मुलाकात में शान्त मुद्रा में अपने सत्य-स्वरूप का तथा अतीन्द्रिय सुख का गहन अनुभव करा दिया। मैं बचपन से इसी खोज में था और उस पहली मुलाकात ने मुझे अपने रूहानी परमपिता परमात्मा शिव का दिव्य-दर्शन भी कराया तथा उनके विश्व-परिवर्तन अथवा युग परिवर्तन के सर्वोत्तम कार्य में तत्पर होने के लिए तुरंत समर्पण होने की प्रबल प्रेरणा दी।

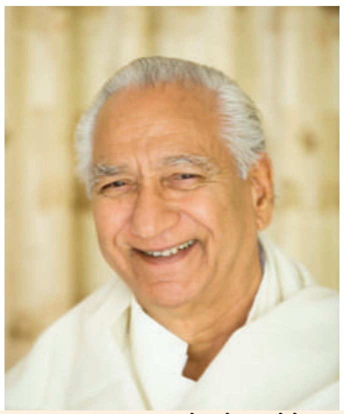

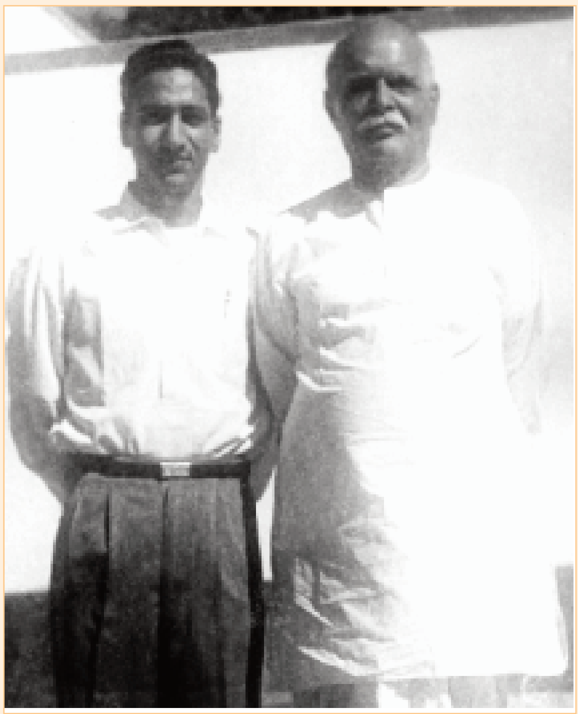

ब्रह्मा बाबा की व्यक्तिगत मिसाल ने हज़ारों आत्माओं को, विश्व को पुन: सतोप्रधान बनाने हेतु अपने व्यक्तिगत जीवन को सतोप्रधान पावन बनाने तथा अनेकानेक अन्य आत्माओं को उस परमपिता परमात्मा का शुभ-संदेश देने में समर्पण करा दिया। हर एक के मन में यही भावना उत्पन्न होती रही कि हम विश्व की सर्व मनुष्यात्माओं को बताएं कि, उस बेहद पिता का इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर यही फरमान है-''मीठे बच्चे, पवित्र बनो।'' इस अंतिम जन्म में अगर परमपिता परमात्मा की श्रीमत पर पवित्र बनते हैं तो 21 जन्मों के लिए विश्व की बादशाही मिल जाती है। बस अब शिव बाबा को याद कर पवित्र बनो तो पवित्र दुनिया का मालिक बन जायेंगे। मनुष्य से देवता बन जायेंगे। बाबा के शब्दों में वह शक्ति है कि जिसे भी यह पैगाम मिला, वह अपनी आध्यात्मिक उन्नति की ओर अग्रसर हो गया। बाबा का नि:स्वार्थ आत्मिक प्यार हर एक को अपने सच्चे कल्याणकारी मात-पिता व बाप-दादा के अपनेपन की महसूसता सहज ही करा देता और अपने उच्च लक्ष्य को प्राप्त करने के पुरुषार्थ में तुरंत जुट जाने की तीव्र इच्छा उत्पन्न करा देता। ऐसी ही एक घटना मुझे याद आ रही है-सन् 1963 अन्त की बात है जब एक दम्पत्ति कलकत्ता से बाबा को मिलने बम्बई आए थे। बाबा ने श्री लक्ष्मी-श्री नारायण के नये-नये प्रिन्ट हुए चित्र की ओर इशारा करते हुए जब उन्हें ऐसा सतयुगी विश्व महाराजन् बनने का लक्ष्य देते सम्पूर्ण जीवन, व्यतीत करने का इशारा दिया तो पति-पत्नी दोनों ने बाबा की पवित्र बनने की श्रीमत को सहज सहर्ष स्वीकार किया। ''वाह बाबा, वाह! कमाल है आपके कल्याणकारी भावना के इन महावाक्यों में!'' विवेकानंद जी और गांधी जी की पुस्तकों में व धर्म ग्रंथों में पवित्र चरित्रवान जीवन की महिमा की अनेक गाथाएं पढ़ी-सुनी थीं। ऋषियों की, मुनियों की बातें पढ़ी थीं, परंतु गृहस्थ जीवन में रहते पवित्रता के महत्व को पहचान कर अपनाना, यह तो ईश्वरीय महावाक्यों का कमाल है, उस महान विभूति, उस रूहानी शहज़ादे ''ब्रह्मा बाबा'' के निजी पवित्रता की शक्ति का ही कमाल है। जो आज हज़ारों बहन-भाई अपने दाम्पत्य जीवन में रहते मन-वाणी-कर्म से पावन बन पावन सतयुगी सृष्टि के पुन: निर्माण में सहयोगी बने हैं और सिद्ध होता है इसी से प्रजापिता ब्रह्मा के कर्त्तव्य का वर्तमान समय इस पुरुषोत्तम संगम युग पर पुनरावृत्त होगा। कठोर तप व रूहानियत की समुद्री गहराइयों में जाए बिना ऐसी प्राप्ति, ऐसी स्थिति नहीं बन पाती। व्यक्ति का व्यक्तित्व उसके रहन-सहन, बोल-चाल, संग, पत्र-व्यवहार, प्रवचनों व लेखनी से सहज समझ में आता है। परमपिता परमात्मा शिव के योग्य पवित्र माध्यम बनने के लिए ब्रह्मा बाबा ने अपने भक्ति-काल में बहुत कठिन प्रयत्न व पुरुषार्थ किया था, जो उनके निजी डायरियों व अनुभवों से पता चलता है तथा अपने ज्ञान-काल में भी उन्होंने बहुत-गहराई से एकान्त में व सामूहिक रूप से तपस्या कर ''रूहानी याद की यात्रा'' की अति सूक्ष्म गहराई में जाकर आत्मा की श्रेष्ठता की ''बाप-समान चरम सीमा के अनुभव'' प्राप्त किये जो उन्होंने अपने प्रवचनों में एक सर्व अलौकिक बच्चों के मार्ग दर्शन हेतु व्यक्त किये हैं। उनकी रूहानियत की चरम सीमा का आभास तब होता जब वह हर एक व्यक्ति को नज़र से निहाल करते वे ''बच्चे-बच्चे'' कह संबोधित करते तो सहज ही स्व-अनुभूति व परमात्म-अनुभूति हो जाती और ब्रह्मा बाबा का व्यक्तित्व रूहानी अथॉरिटी का अनुभव करा देता। इस संबंध में ही एक घटना याद आ रही है।

सन् 1966 की बात है जब ब्रह्मा बाबा का साकार रूप में अंतिम बार मधुबन से बाहर बम्बई जाना हुआ। उस समय मेरे एक पत्रकार मित्र रामकृष्ण आडवाणी बाबा से मिलने आये और बाबा के सम्मुख बैठते ही कहने लगे, दादा मुझे सेल्फ रियलाइज़ेशन कराओ। बाबा मुस्कुराते पूछने लगे, ''बच्चे, सेल्फ रियलाइज़ेशन कौन करना चाहता है?'' आडवाणी जी बोले मैं। बाबा ने पूछा मैं बोलने वाला कौन? और फिर स्वयं ही उत्तर दिया कि मुख से बोलने वाला, कानों से सुनने वाला, आँखों से देखने वाला ''मैं आत्मा हूँ, रूह हूँ।'' अब आप इस निश्चय में बैठो कि मैं आत्मा हूँ। रूह हूँ। बस इतना समझा कर बाबा बिल्कुल शांत मुद्रा में बहुत मीठी रूहानी दृष्टि देते रहे और आडवाणी बाबा की तरफ देखते-देखते स्वयं रूहानी स्थिति में स्थित बहुत सुख का अनुभव करने लगे। थोड़े समय के बाद जब बाबा ने पूछा ''बच्चे आत्मानुभूति हुई।'' तो आडवाणी बोले, ''हाँ जी बाबा।'' स्वत: ही मुख से बाबा-बाबा शब्द उच्चारण होने लगा। और तब से आडवाणी स्वयं के रूहानी पुरुषार्थ के साथ-साथ अनेक आत्माओं को अपने अनुभव सुनाने व लेखनी के द्वारा रूहानियत के मार्ग पर चलने की प्रेरणा के निमित्त बन गए। आडवाणी जी हमेशा सुनाते कि बाबा के सम्मुख बैठे उन्हें ऐसा सुखद अनुभव हुआ कि भल बैठे ज़मीन पर हैं, लेकिन वह एक महान रूहानी शहज़ादे के बहुत समीप व सम्मुख बैठे हैं।

क्या भाग्यवान हैं वह आत्माएं, जिन्हें साकार अथवा अव्यक्त रूप से बाप-दादा के सम्मुख व समीपता का अनुभव प्राप्त हुआ और अपने जीवन को ब्रह्मा बाप समान रूहानी शहज़ादे या शहज़ादियां बनने का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ है और साथ-साथ विश्व-कल्याणकारी -पन की सेवा का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ है। वर्तमान समय बाप-दादा अपने सूक्ष्म आकारी रूप से विश्व के कोने-कोने में अनेक भाई-बहनों को अपने फरिश्ते स्वरूप द्वारा रूहानी राह दिखाते रहते हैं। ऐसे अनुभव अनेक भाई-बहन लिखते हैं।

भोपाल। 'जीवन में सफलता' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. गीता, माउण्ट आबू, गोविंद गोयल, सीनियर वाइस प्रेसिडेंट, फेडरेशन ऑफ एम.पी. चेम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज़, ब्र.कु. रीना, ब्र.कु. वासुदेव।

इन्दौर-तलेन(म.प्र.)। वृक्षारोपण करते हुए नगराध्यक्ष अशोक पंडित, नगर पालिका अध्यक्ष चन्दर सिंह यादव, हिन्दु उत्सव समिति के अध्यक्ष लक्ष्मीनारायण यादव, ब्र.कु. मधु तथा अन्य।

नोएडा-सेक्टर 33। आध्यात्मिक कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए वीर भद्रम विस्लावथ, आई.आर.एस., असिस्टेंट कमिश्नर ऑफ इनकम टैक्स। मंचासीन हैं श्रीमती पूजा विस्लावथ, ब्र.कु. मंजू, सेवाकेन्द्र संचालिका तथा पूर्व मंत्री नवाब सिंह नागर।

इंदौर छावनी। '7 अरब सत्कर्मों की महायोजना' की लॉन्चिंग करते हुए ब्र.कु. रामप्रकाश, न्यूयॉर्क, अनाज मंडी अध्यक्ष नंदकिशोर अग्रवाल, डॉ. हीरा, पत्रकार आशीष गुप्ता तथा ब्र.कु. सुमित्रा।

जयसिंगपुर-महा.। टी.वी. स्टार अदिति सारंगधर, लक्ष्य फेम मालिक को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. राणी।

मंदसौर-म.प्र.। 'सात अरब सत्कर्मों की महायोजना' का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. रामप्रकाश, नगरपालिका अध्यक्ष कुसुम गुप्ता, वरिष्ठ अभिभावक धीरेन्द्र त्रिवेदी, ब्र.कु. समिता व ब्र.कु. हेमलता।

रानियाँ। समाज सेवी संस्था के साथ स्वच्छ भारत के अंतर्गत 'जागरुकता अभियान' का शुभारंभ करते हुए ब.कु. कमलेश, ब्र.कु. नीतू तथा अन्य।

OM 19 a_Page 1 and 2 26/12/2014 12:49 PM Page 6

गुवाहाटी-रूप नगर। 'गीता के भगवान द्वारा स्वर्णिम युग की स्थापना का समय' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए श्री श्री भृगु गुरु महाराज,आचार्य पंचकन्या धाम,बसिस्ठा, ब्र.कु. बृजमोहन, ब्र.कु. आशा,दिल्ली, ब्र.कु. उषा,माउण्ट आबू, ब्र.कु. शीला तथा अन्य।

अहमदनगर। राजयोगिनी ब्र.कु. उषा के 'गीता ज्ञान प्रवचनमाला' कार्यक्रम के ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन का उद्घाटन करते हुए समाजसेवी अन्ना हज़ारे। साथ हैं ब्र.कु. राजेश्वरी, ब्र.कु. दीपक हरके, ब्र.कु. रामचन्द्र हीरे, डॉ. बापू साहेब कांडेकर तथा अन्य।

वार्शी। लायन्स क्लब द्वारा सेवाकेन्द्र पर ब्र.कु. संगीता व ब्र.कु. अनीता का सम्मान करने के पश्चात् समूह चित्र में लायन्स क्लब अध्यक्षा शिल्पा कुलकर्णी, लायन्स क्लब पूर्व अध्यक्षा वर्षा खांडवीकर, सदस्या डॉ. प्रज्ञा हाजगुडे, वैभवी बुडूख तथा सीमा काले।

नवी मुम्बई-वाशी। आर.एस.एस. द्वारा आयोजित 'सद्भावना बैठक' में उपस्थित हैं ब्र.कु. शीला, डॉ. नागेन्द्र कुमार उपाध्याय, तथा अन्य संस्थाओं के प्रतिनिधि।

हरिद्वार। आध्यात्मिक कार्यक्रम के अंतर्गत सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. मीना। साथ हैं महन्त उमेश्वर महाराज,हरिद्वार।

दिल्ली-नरेला मण्डी। 'सात अरब सत्कर्मों की महायोजना' कार्यक्रम में आये विधायक गुगन सिंह का स्वागत करते हुए ब्र.कु. दुर्गा। साथ हैं विधायक नीलदमन जी तथा समाजसेवी राजेन्द्र सिंगल जी।

सदा शक्तियों को आगे रखने में ही सफलता

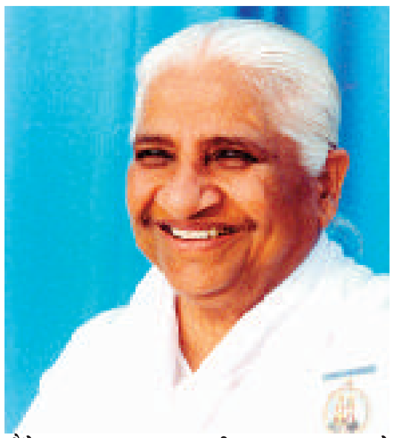

आज भी आपका त्यागी और योगी जीवन अनेक आत्माओं को प्रेरणा दे रहा है। आपका रूहानियत सम्पन्न चेहरा अनेक चेहरो में रूहानियत का बीज अंकुरित कर देता था। आपके मुख की दिव्य मुस्कान, दूसरों के दुखों का अन्त कर देती थी। आप लगभग 39 वर्षों तक प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की मुख्य प्रशासिका थीं। जैसे परमपिता से रूहों का असीम प्यार है, वैसे ही दादी जी ने सभी आत्माओं के दिल को जीत कर इस संगठन को एकता के सूत्र में बांधा। ईश्वरीय परिवार आपकी सेवाओं से गौरवान्वित है। यहाँ, ब्रह्मा बाबा के सम्पूर्ण स्थिति प्राप्त कर अव्यक्त होने के समय के दादी जी के अनुभव, उनके ही योग-युक्त भावों में प्रस्तुत है......। मैं कई वर्षों से बम्बई सेवा पर उपस्थित थी। वहाँ भेजकर बाबा ने मुझे कहा था, कि बच्ची, जैसे बाबा सभी को संतुष्ट करता है, वैसे ही तुम भी सभी को सन्तुष्ट करो। और जैसे कि बाबा ने मुझे वरदान दे दिया था।

मुझे यह सदा उमंग रहता था कि मैं बाबा की सभी प्रेरणाओं को पूरा करूँ। और यह मेरा अनेक बार का अनुभव है कि बाबा का पत्र आने से पूर्व ही मैं बाबा की प्रेरणाओं को जान लेती थी। जिन महान सेवाओं के लिए बाबा ने मुझे भेजा था, मैं पूर्णतया निभाती थी, सभी के प्रति सुख-स्वरूप होकर रहने की कामना रखती थी। इस प्रकार मैं दिसम्बर 1968 में बम्बई से पार्टी लेकर मधुबन आई थी। उसी समय दीदी सेवा-केन्द्रों पर चक्कर लगाने दिल्ली की ओर जाने वाली थीं, इसलिए मैं वहीं मधुबन में बाबा के पास रह गई। और ये कुछ ही दिन बाबा के साथ रहना, कि बाबा ने मुझे सब कुछ सिखा दिया।

मैंने देखा कि बाबा जब किसी भी बच्चे से मिलता है तो थोड़े ही शब्दों में उसकी समस्याओं को हल करके, उसे हल्का कर देता है। मैं देखती थी, बाबा यज्ञ के कार्य करते सदा उपराम नज़र आते थे। ऐसा लगता था कि निराकार शिवबाबा सदा ही उनके तन में विराजमान है। परन्तु वास्तव में वह साकार बाबा ही निराकार हो चुके थे, सम्पूर्ण फ़रिश्ता बन चुके थे।

बाबा ने मुझे एक हफ्ते में ही सब कुछ सिखा दिया। पार्टियों को बाबा की भासना कैसे देनी है। यज्ञ को पूर्णतया कैसे सम्भालना है। हर बच्चे की स्थिति पर कैसे ध्यान रखना है, सब यज्ञ वत्सों को कैसे सन्तुष्ट करना है। आदि....आदि...। एक दिन बाबा ने मुझसे कहा, ''कुमारका, अगर बाबा एक तरफ बैठ जाए तो तुम यज्ञ को सम्भाल सकती हो?'' मैंने बड़े ही फ़क्र से उत्तर दिया – '' हाँ बाबा, क्यों नही।'' मुझे क्या पता था कि बाबा के ये बोल सम्पूर्ण सत्य होंगे और हमारा प्यारा बाबा सचमुच ही देह से न्यारा होकर वतन में बैठने जा रहा है। तब बाबा को अपने सम्पूर्ण फ़रिश्ता बनने का स्पष्ट अनुभव था।

बाबा आपको क्या वरदानी बोल बोलते थे और बाबा के साथ रहते आपने क्या क्या सीखा ?

बाबा कहा करते थे– '' ये बच्ची माला में नम्बर वन है। ये वफादार बच्ची है। तभी बाबा कहते थे कि ये बाबा की सम्पूर्ण पवित्र कन्या है। ये सच्ची आज्ञाकारी बच्ची है। बाबा कहते रहते थे कि कुमारका बड़ी नदी है। ये महारथी बच्ची है, इस प्रकार मुझे यह महसूस होता था कि जैसा मेरे मन में बाबा के प्रति अथाह प्यार व आदर है, बाबा भी मुझे सच्चे प्यार व सम्मान की दृष्टि से निहारता है। बाबा के साथ रहते हुए मैंने बाबा के जीवन से अत्यधिक उदारता और राजाओं जैसी शालीनता सीखी। मैंने बाबा से कार्य व्यवहार में रहते हुए उपराम रहने की कला सीखी, वरदानों से इतना सजाया जो आज भी बाबा के वे चरित्र नयनों से ओझल नहीं होते।

जब बाबा अव्यक्त हुए, उस दिन बाबा की दिनचर्या कैसी रही?

उस 18 जनवरी के स्मृति पटल पर अमिट रूप से अंकित दिवस पर सवेरे से ही बाबा का स्वास्थ्य ठीक नहीं था। यज्ञ के इतिहास में और बाबा के तपस्वी जीवन में केवल यह एक ही समय था जबकि बाबा ने प्रात: की मुरली नहीं चलाई थी, परन्तु उस दिन सर्वोच्च स्थिति में, ईश्वरीय खुशी में स्थित थे। जब हमने डॉक्टर को बुलाने को कहा तो बाबा ने उसी मस्ती में कहा था– ''बच्ची डॉक्टर क्या करेगा, मैं तो सुप्रीम सर्जन से बातें कर रहा हूँ।'' उसी दिन बाबा ने कहा– ''आओ, आज बच्चों को पत्र लिखूँ।''और फिर बाबा के हाथ में थी वह लाल कलम, जिसके सुन्दर अक्षर सभी के दिलों को खींच लेते थे। बाबा ने सभी पत्रों के उत्तर दिये। बाबा ने लिखा था, ''बच्चे सदा एक मत होकर, एक की याद में रहना है और सदा शक्तियों को आगे रखना है। तब ही सेवा में सफलता होगी।'' ये अंतिम पत्र कई बच्चों ने अपने दिल में छुपा कर रख लिए थे। कितनी सौभाग्यशाली थीं वे आत्माएं जिन्हें स्वयं सृष्टि रचता ब्रह्मा ने अपने हस्तों से पत्र लिखे थे।

फिर शाम को जल्दी ही क्लास प्रारम्भ हुई। मैंने कहा '' बाबा, सभी इन्तज़ार कर रहे होंगे, आज जल्दी ही आप क्लास में चलें। उस दिन बाबा 8.00 बजे ही क्लास में आये और साकार रूप में वे अन्तिम महावाक्य तो सम्पूर्ण गीता ज्ञान का सार है... दिल में समाने तुल्य है... बाबा ने कहा था— ''बच्चे, सिमिर सिमिर सुख पाओ, कलह क्लेश मिटें सब तन के, जीवनमुक्ति पाओ।'' ''बच्चे, निन्दा जो हमारी करे, मित्र हमारा सोई'' तुम्हें किसी की भी निन्दा नहीं करनी चाहिये और किसी से वैर विरोध भी नहीं रखना।'' इस प्रकार याद की यात्रा पर बल देते हुये यज्ञ पिता, बाबा खड़े होकर गेट की ओर चले और फिर गेट पर रुक गये.... बोले – '' बच्चे निर्विकारी, निराकारी और निरहंकारी बनो। जैसे बेहद का बाप सम्पूर्ण व सदा निर्विकारी है, सदा निराकार है निरहंकारी है वैसे ही बच्चों को भी बनना है।''

और फिर उस अन्तिम घड़ी की पूर्व परछाई फेंकते हुए बाबा के मुख से ये शब्द निकले – ''अच्छा बच्चे विदाई।'' ये शब्द बाबा ने केवल उसी ही रात बोले थे, जब बाबा साकार तन से बच्चों से सदा के लिए विदाई लेने जा रहे थे। नहीं तो बाबा, सदा बच्चों को गुड नाइट ही कहा करते थे।

जब बाबा ने देह त्याग कर सूक्ष्म वतन को अपना सिंहासन बनाया, वह अनुभव सुनाइये।

मुरली सुनाने के बाद बाबा अपने कमरे में गये। हम 4 बहनें भी बाबा के साथ गईं, तब बाबा के चेहरे पर सम्पूर्ण शान्ति व दिव्यता झलक रही थी। बाबा चारपाई पर नीचे पैर करके बैठे थे, तब उस अन्तिम घड़ी में, मेरा हाथ बाबा के हाथ में था। बाबा मुझे दृष्टि दे रहे थे। दृष्टि देते ही बाबा शरीर से उड़ चले और मेरे हाथ में बाबा का हाथ ढ़ीला पड़ गया। मुझे ऐसा आभास हुआ था कि बाबा मुझे हाथ में हाथ देकर अपनी सम्पूर्ण शक्तियाँ व उत्तरदायित्व दे - **शेष पेज 8 पर...**

OM 19 a_Page 1 and 2 26/12/2014 12:49 PM Page 7

बाबा ने मुझे उड़ता पंछी बनाया

- ब्र.कु. जयंती,यू.के. एंड ओवरसीज़ को-ऑर्डिनेटर

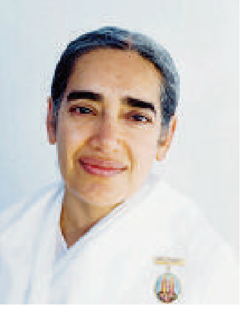

मेरा जन्म सन् 1949 में पूना में एक सम्पन्न धार्मिक परिवार में हुआ। घर में माता-पिता तथा दादी को भक्ति पूजा का शौक था। कभी-कभी मैं भी उनके साथ मंदिर में जाया करती थी। लेकिन अंदर से मेरी इतनी रुचि नहीं थी। माता-पिता के लौकिक व्यापार के कारण हम सभी का लंदन जाना हुआ। लेकिन मैं छुट्टियां मनाने के लिए पूना में आती थी। वही से हम बाबा से मिलने आबू जाते थे। 1956 में एक दिन मुरली चलाते समय मुझे देखकर बाबा ने कहा था कि ये बच्ची ईश्वरीय सेवा करेगी, ये तो बहुत अच्छी टीचर बनेगी। फिर तो हम लंदन चले गये।

बाबा की अनोखी पालना

बाबा सन् 1957 से लेकर लंदन में रजनी बहन(लौकिक माँ) को खुद अपने हाथों से मुरलियाँ भेजते थे। अपने हस्ताक्षर से पत्र लिखते थे। फिर बाबा ने टेप से संदेश भेजना भी चालू किया। जो भी छपाई होती थी, बाबा ज़रूर हमारे पास भेजते थे। जब त्रिमूर्ति, सृष्टि चक्र और कल्प वृक्ष के चित्र तैयार हुए तो बाबा ने चित्रों का सेट गोल्डन बासकेट में भेजा और कहा कि ये लंदन की रानी को सौगात देना और इन चित्रों से विश्व-सेवा करना। लेकिन उस समय विश्व सेवा की रूपरेखा तो नज़र ही नहीं आती थी। फिर भी बाबा ने वर्षों पहले जो बातें कही थीं, उनका साकार स्वरूप आज हम सभी देख ही रहे हैं।

बाबा के प्यार ने मेरा दिल जीत लिया

उन दिनों मुझे लंदन बहुत दूर लगता था। 1959 के मई मास में भारत में आम की सीज़न चल रही थी। तब लंदन में आम की कमी थी। तो बाबा ने 4 आम का पैकेट एयर-मेल से हमारे घर भेजा था। तो उस पैकेट को देखकर मैं और मेरा 6 वर्ष का छोटा भाई एकदम आश्चर्यचकित हुए। हमें लगा कि बाबा हमें कितना याद करते और प्यार भी देते हैं। जो प्यार हमें लौकिक संबंधियों से नहीं मिलता था, वह बाबा ने हमें दिया। सचमुच उस अनोखे प्यार ने मेरा तो दिल ही जीत लिया था।

बाबा से मिलकर मुझे अपनापन महसूस होता था। ऐसा लगता था कि बाबा सब कुछ जानते हैं। बाबा जैसे की मन की बातें पढ़ लेते थे। उस समय बाबा ये नहीं देखते थे कि इन बच्चों में इतना ज्ञान तो नहीं है, फिर भी शुभचिन्तक बनकर हमें सुन्दर राज़युक्त बातें सुनाते थे और हर प्रकार के स्थूल तथा सूक्ष्म खातिरी करते थे। फिर तो हम लंदन चले गए और मैं अपनी पढ़ाई में व्यस्त हो गई।

मैंने अपने जीवन का फैसला किया

जून 1968 में मधुबन में झोपड़ी में बैठे हुए बाबा से मैंने अपने जीवन के फैसले की बात की। तो बाबा ने मुझे पूछा कि बच्ची क्या चाहती हो? तो थोड़े ही शब्दों में मैंने कहा कि बाबा मैं तो ईश्वरीय सेवा में ही अपना जीवन सफल करना चाहती हूँ। तो बाबा ने तुरंत कहा कि बच्ची तो विजयी बनेगी। वह घड़ी तो मेरे जीवन में महत्वशाली घड़ी थी।

बाबा ने मुझे नज़र से निहाल किया

उन्हीं दिनों में हम रात्रि के समय मुरली के बाद बाबा से गुड-नाईट करने जाते थे। बाबा अपनी खटिया पर लेटे हुए थे। हम 10-12 भाई-बहनें दादी जानकी जी सहित बाबा के सामने जाकर खड़े हुए। बाबा के तकिया के बाजू में मोतिया के फूल थे, उसकी बड़ी मीठी खुशबू आ रही थी। तो बाबा ने सभी को दृष्टि दी और मुझे सामने बुलाया। मोतिया के फूल हाथ में देकर बाबा ने मुझे दृष्टि दी। उस दृष्टि से मुझे अनुभव हो रहा था कि बाबा चुम्बक के समान आत्मा को खींचकर बिल्कुल पार ले जा रहे थे जैसे कि एक प्रकाश की दुनिया का अनुभव हो रहा था जिसमें मैं और बाप दोनों ही हैं। कितने समय तक यह सीन चली मुझे भान ही न था। इस अनुभव से तो जैसे मेरा मरजीवा जन्म ही हुआ।

बाबा हमारे साथ खेल खेलते थे

ब्रह्मा बाबा बुजुर्ग थे, फिर भी हम बच्चों को खुश करने के लिए चुस्ती से बैडमिंटन का खेल खेलते थे। खेलते समय बाबा लाईट और माईट हाऊस अनुभव होते थे। बाबा ने मुझसे पूछा कि बच्ची जानती हो किसके साथ खेल रही हो, शिव बाबा के साथ खेल रही हो ना? तो न सिर्फ बाबा ने शब्दों से हमें बताया लेकिन प्रैक्टिकल हमें अनुभव कराया। ऐसे ही एक बार मैं बाबा के साथ भोजन कर रही थी, बाबा ने मुझे बहुत देर तक दृष्टि दी। तो वायब्रेशन्स से ऐसा लगता था कि हम किसी साधारण व्यक्ति के साथ नहीं लेकिनपावरफुल अथॉरिटी के साथ हैं।

बाबा के जीवन में संतुलन देखा

बाबा की पावरफुल पर्सनैलिटी होते हुए भी, नम्रभाव और प्रेम-सम्पन्न व्यवहार देखा। वैसे तो संसार में हम देखते हैं कि किसी की अगर पर्सनैलिटी अच्छी होती है तो साथ में रोब ज़रूर होता है। परंतु बाबा के जीवन में यह अनोखा संतुलन था, इसलिए विश्वपिता होते हुए भी यज्ञ की हर छोटी-छोटी बात का ध्यान रखते थे। हरेक बच्चे के लिए हर प्रकार की सुख-सुविधा हो, ऐसा प्रैक्टिकल माता का पार्ट बजाते हुए भी हमने बाबा को देखा।

अव्यक्त बापदादा ने मुझे विदेश सेवा पर भेजा

अव्यक्त बापदादा ने जून 1969 में मुझे कहा कि बच्ची, बाबा तुम्हें लौकिक घर (लंदन) में नहीं भेज रहे हैं लेकिन विशेष सेवार्थ भेज रहे हैं। तुम भले अपने घर में रहो लेकिन मधुबन जैसी दिनचर्या बनाना जिससे आपकी सेफ्टी भी रहेगी और बाबा तुम्हें शक्ति भी देते रहेंगे। बाबा ने मुझे विशेष कहा था कि अमृतवेले भगवान का द्वार वरदान पाने के लिए सदा खुला रहता है, जितना खज़ाना लेना चाहो ले सकती हो। तो लंदन में इतनी सर्दी होते हुए भी मैं और रजनी बहन प्रतिदिन प्रातः योग और मुरली क्लास करते थे जिससे हमारा उमंग-उल्लास सदा बढ़ता ही रहा। बाद में 1971 में वहाँ भारत से कुछ भाई-बहनें सेवार्थ आये थे जिससे धीरे-धीरे सेवा बढ़ती गई। फिर 1974 में दादी जानकी जी का सेवार्थ आना हुआ। दादी जी के आने के बाद तो सेवा वृद्धि को पाती रही और अभी तो बहुत तेज़ी से बाबा की सेवा आगे बढ़ती जा रही है।

बाबा विदेश में फरिश्ता रूप से सेवा कर रहे हैं

ब्रह्मा बाबा अव्यक्त होने के बाद जैसे कि फरिश्ता रूप से विशेष विदेश सेवा कर रहे हैं यह अनुभव कई बार हमें हुआ। साकार बाप तो भारत में रहे लेकिन अव्यक्त बाप तो विश्व की सेवा कर रहे हैं। विदेशी बच्चों को जगाकर पालना भी कर रहे हैं। इससे उनको ऐसा लगता है कि बाप हमारा ही बाप है जो हमें प्यार करते और शक्ति भी देते हैं। कई विदेशियों को विशेष प्रेरणाएं तथा दिव्य अनुभव प्राप्त होते हैं।

बापदादा ने मुझे बहुत मदद की

एक बार करेबियन के बहामास में एक गुरु के आश्रम में बहुत बड़ी कॉन्फ्रेन्स थी, जिसमें हमें निमंत्रण मिला था। भाषण का विषय था ''दो हज़ार सन् के बाद संसार का भविष्य''। तो मैं उस समय लंदन में ही थी। तो मैंने इसका जवाब पूछने के लिए मधुबन में पत्र लिखा। तो बापदादा ने बहुत सुंदर शब्दों में उसका जवाब दिया था कि बच्ची, विनाश के बारे में तो कुछ कहने की आवश्यकता ही नहीं। उन्हें बताओ कि भविष्य में बहुत सुंदर स्वर्णिम दुनिया आ रही है, उसके लिए हमें किस प्रकार की तैयार करनी चाहिए, तो ये सुनकर वो खुश हो जायेंगे। मुझे सेवा करते समय साकार बाबा की बताई हुई बात सदा याद आती है कि मुरली चलाते समय बाबा के सामने एक देश के एक धर्म के लोग होते हुए भी ऐसी बातें सुनाई जो सर्वधर्म और सर्वदेश की आत्माओं के काम की बातें थीं। उससे स्पष्ट होता था कि बीजरूप, ज्ञान सागर बाप बोल रहे हैं। बाबा ने 1967 में मुझे कहा था कि-बच्ची विदेश में जाकर बाबा का ज्ञान सुनाएगी, उन्हों को बताएगी कि विश्व की हिस्ट्री, जॉग्रफी क्या है और जैसे ही वो लोग सुनेंगे तो पूछेंगे कि ये ज्ञान तुमको सिखाने वाला कौन है? और बच्ची कहेगी कि ये ज्ञान बाप भारत देश में आबू पर्वत पर मधुबन में सुना रहा है। तो 1970 से लेकर विदेश में जब भी भाषण करने का मौका मिला तो कई बार इस प्रकार की सीन प्रैक्टिकल में देखी। सचमुच बाबा और मधुबन की याद मुझे सदा लाइट रखती है। सेवाक्षेत्र में बहुत बातें आती हैं। फिर भी स्वयं को डबल लाइट रखकर उड़ता पंछी बन सदा उड़ती रहती हूँ। दूसरी बात, मैं अपनी बुद्धि की लाइन सदा क्लीयर रखती हूँ जिससे समय प्रति समय स्व-उन्नति के लिए तथा विश्व-सेवा के लिए बाबा की प्रेरणाओं को कैच कर सकूं।

हरदोई-उ.प्र.। 12 दिवसीय 'अलविदा तनाव' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए प्रमुख वक्ता ब्र.कु. पूनम,सी.एस.,म.प्र. ब्र.कु. रोशनी, सर्व धर्म के प्रमुख समाज सेवी अशोक मिश्र, हाजी डॉ. एन.ए. अन्जारी, सिस्टर अलवेला, वाजबहादुर सिंह, सी.एस.एन. पी.जी. डिग्री कॉलेज के प्राचार्य नरेश शुक्ला तथा अन्य।

घरौंडा। 'परमात्म शक्ति द्वारा महापरिवर्तन का समय' विषयक कार्यक्रम में अनाज मण्डी प्रधान सुखबीर सन्धु को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. प्रेम। साथ हैं ब्र.कु. दयाल, ब्र.कु. सतीश, अभिनेत्री मोनिका पटेल, ब्र.कु. नितिन तथा अन्य।

कोटा-राज.। 'सम्पूर्ण ग्राम विकास मेला' का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. सरला,राष्ट्रीय संयोजिका,ग्राम विकास प्रभाग,मेहसाना, बाबूलाल वर्मा,राजस्थान राज्य परिवहन मंत्री, ब्र.कु. हेमा तथा अन्य।

नवरंगपुर। 'परमात्म शक्ति द्वारा महापरिवर्तन का समय' कार्यक्रम के उद्घाटन अवसर पर उपस्थित हैं विधायक भुजबल मांझी, विधायक मनोहर रंधीर, ए.डी.एम. भीममान सेठ, ब्र.कु. गीता तथा ब्र.कु. नीलम।

OM 19 a_Page 1 and 2 26/12/2014 12:49 PM Page 8

ग्वालियर। व्यवसायियों के लिए आयोजित 'स्ट्रेस फ्री प्रोफेशनल एक्सीलेंस' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. गीता,माउण्ट आबू, ब्र.कु. राधा, ब्र.कु. रुक्मणि, ब्र.कु. सुधा, ब्र.कु. चेतना, ब्र.कु. गुरचरण, विष्णु गर्ग,एम.पी. प्रेसीडेंट,चेम्बर ऑफ कॉमर्स तथा पिताम्बर लोकवानी,व्यवसायी।

इन्दौर। यातायात एवं परिवहन प्रभाग द्वारा सड़क दुर्घटना में पीड़ितों की स्मृति में आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. हेमलता। मंच पर बस ऑपरेटर एसोसिएशन के सचिव अनिल भावसार, यातायात डी.एस.पी. विक्रमसिंह रघुवंशी, प्रदीपसिंह चौहान, एडिशनल एस.पी. अंजना तिवारी, आर. रक्षित तथा ब्र.कु. अनिता।

जबलपुर-कटंगा कॉलोनी। साइंटिस्ट एंड इंजीनियर्स प्रभाग द्वारा 'री डिस्कवरिंग लाइफ' विषयक कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. ओमप्रकाश। मंचासीन हैं जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्व विद्यालय के कुलपति डॉ. वी.एस. तोमर, म.प्र. पावर ट्रांसमिशन कम्पनी लि. के मैनेजिंग डायरेक्टर उमेश राउत, ब्र.कु. मोहन सिंघल, ब्र.कु. आशा, ब्र.कु. विमला तथा अन्य।

नांगल डैम। नीरू अबरोल,सी. एंड एम.डी.,नेशनल फर्टिलाइज़र्स लि. को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. रीमा। साथ हैं श्रीमान व श्रीमती के.के. चतुर्वेदी,जी.जी.एम.,एन.एफ.एल.,नांगल यूनिट, ब्र.कु. विवेक, ब्र.कु. नीतू तथा अन्य।

पनवेल। महाराष्ट्र भूषण राज्य दण्ड प्राप्त प्रथम सन्यासिनी परमहंस सतगुरु श्री वीणा भारती महाराज को ओमशान्ति मीडिया देते हुए ब्र.कु. तारा।

सासाराम-बिहार। स्वच्छ भारत अभियान का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करने के पश्चात् परमात्म स्मृति में एस.डी.ओ. नालिन कुमार, डी.एस.पी. अलख निरंजन चौधरी, कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष शिव नारायण यादव, ब्र.कु. बबिता, ब्र.कु. सुनीता तथा अन्य।

आत्म-जागृति से होते हैं चमत्कार

महावीर स्वामी जहाँ जंगलों में तपस्या करने के लिए बैठते थे। उनकी प्रभा चारो ओर इतनी फैलती थी कि उस प्रभा के अंदर कोई हिंसक प्राणी भी आ जाता तो वो भी अपनी हिंसक वृत्ति को छोड़कर अहिंसक हो जाता था। हमने मदर टेरेसा, आदरणीय प्रकाशमणि दादीजी, पिताश्री ब्रह्मा बाबा को देखा। पिताश्री ब्रह्माबाबा के जीवन कहानी से वह प्रसंग, जब उन्हें मारने के लिए कई लोगों ने एक षड्यंत्र रचा। जो ऐसी बातों का प्रचार कर रहा है। उसको खत्म कर दो और उसके लिए उन्होंने ऐसे व्यक्ति को नियुक्त किया जो एक नामी गुण्डा था, हत्यारा था। जब वो मारने के लिए आया तो पिताश्री ब्रह्माबाबा ने उसको बहुत प्यार से सत्कार कर के उसको स्थान दिया। उसने मौका देखकर उनको मारने के लिए हथियार निकाला तो उसे वहाँ पर अपने इष्टदेव का साक्षात्कार हुआ। इष्ट का साक्षात्कार होते ही उसकी मनोवृत्ति में परिवर्तन आ गया। उसके मन में यही भावना आई कि इनको हम मार नहीं सकते। इसी तरह, एक बार पिताश्री माउण्ट आबू की पहाड़ियों में तपस्या करने के लिए बैठे थे। एक बहुत ही ज़हरीला साँप आकर के पिताश्री के पैर में लिपट गया। जैसे ही लोगों ने देखा कि अरे ये तो साँप है। पिताश्री जी ने इशारा किया कि ये कुछ नहीं करेगा। इसमें भी एक आत्मा है। ये आत्मा कभी भी वार नहीं करती, जब तक उनको कोई खतरा महसूस न हो। जैसे ही ये कहा और इतनी स्नेह की दृष्टि उस साँप के ऊपर डाली, तो वह सहज रीति से पैर छोड़कर जंगलों में वापिस चला गया।

भावार्थ यह कि इन महान आत्माओं के जीवन में जिसको आज हम चमत्कार कहते हैं, ये चमत्कार नहीं होते हैं, लेकिन ये उनकी चार्ज बैट्री का प्रभाव होता है। वो भी थे तो इसी दुनिया के इंसान और आज हम भी इसी दुनिया के इंसान हैं। अगर वो अपनी आत्मा की बैट्री को चार्ज करें तो ऐसे चमत्कारी प्रभाव दिखा सकते हैं, अर्थात् यदि वे परिस्थिति के ऊपर अपना अधिकार प्राप्त कर सकते हैं तो क्या हम नहीं कर सकते? यही स्वधर्म की शक्ति को जागृत करने की आवश्यकता है और नित्य हर कर्म में जागृति बनी रहे। एक बहुत सुंदर कहानी है, एक गुरु थे और उनका एक शिष्य था। गुरु के मन में ये भावना आयी कि मैं कुछ समय के लिए हिमालय पर जाकर गहन तपस्या करूं। उसने अपने शिष्य को बुलाकर कहा कि मैं हिमालय पर जाकर गहन तपस्या करना चाहता हूँ। मैं समझता हूँ कि जब तक मैं जाऊं तब तक आश्रम की सम्भाल तुम करो और उसका ध्यान रखना। गुरुजी ने कहा कि मैं परसो सुबह-सुबह निकल जाऊंगा, कल का दिन है, फिर भी अगर तुम कुछ पूछना चाहो तो पूछ सकते हो लेकिन ये ध्यान रहे कि कल का दिन मेरा मौन का है। फिर भी यदि तुम कुछ पूछना चाहो तो लिखकर पूछ सकते हो मैं जवाब दूंगा। गुरुजी अपने मौन की अवस्था में थे। दूसरे दिन सुबह जब शिष्य जागा और जैसे ही अपने नित्य कर्म को पूर्ण किया तो उसके मन में एक विचार आया कि कम-से-कम गुरुजी से मैं इतना तो पूछ लूँ कि उनके पीछे आश्रम चलाने में, मुझे कौन सी बातों का ख्याल रखना चाहिए। जिससे मुझसे कहीं गड़बड़ न हो। वो गुरुजी के पास जाता है और गुरुजी से पूछता है। गुरुजी आप मुझे ये बता सकते हो कि मुझे आपके पीछे से कौन सी बातों का ध्यान रखना चाहिए। तो गुरुजी ने एक कागज़ और कलम लिया और उस पर एक शब्द लिखा 'जागृति'। शिष्य ने जब पढ़ा 'जागृति' बस इतनी सी बात। ये सोच कर के वो खुश हो गया कि चलो ये तो बहुत सहज बात है सिर्फ जागृति रखनी होगी। जैसे ही वह बाहर निकला तो वो बार-बार कागज़ को देखता रहा। उसके मन में फिर प्रश्न उठा कि गुरुजी ने एक ही शब्द लिखा, उसके आगे पीछे कुछ लिखा ही नहीं। वो फिर गुरुजी के पास जाता है और पूछता है कि कुछ आगे-पीछे लिखकर दो, आप उसकी व्याख्या कीजिए। गुरुजी ने फिर वो कागज़ लिया, एक शब्द आगे लिखा और एक शब्द पीछे लिखा। वो दोनों शब्द थे 'जागृति'। जागृति.... जागृति....जागृति। शिष्य को जब वो कागज़ मिला, फिर उसने पढ़ा बस जागृति इतनी सी बात है। ये तो मैं कर सकता हूँ। ये तो कोई बड़ी बात नहीं है। खुश होकर के बाहर निकला। बार-बार वो शब्दों को देखता रहा जागृति...जागृति...जागृति... लेकिन उसकी बुद्धि आध्यात्मिकता में इतनी विकसित नहीं हुई थी। फिर उसके मन में प्रश्न आया कि जागृति....जागृति...जागृति... माना क्या? वो परेशान हो गया। फिर गुरुजी के पास जाता है और पूछता है कि गुरुजी जागृति...जागृति....जागृति... का मतलब क्या? गुरुजी ने फिर वो कागज़ लिया और फिर एक शब्द और जोड़ दिया जागृति। जागृति...जागृति...जागृति...जागृति = जागृति।

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

-राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.उषा

सदा शक्तियों .... पेज 6 का शेष

गये। हमारी समझ में कुछ नहीं आया।

हमने बाबा को लिटाया, इतने में ही डाक्टर आ गया और उसने चेक करके कहा कि बाबा अब नहीं रहे......परन्तु मुझे ये आभास नहीं हुआ था कि बाबा चला गया। मैं यही कह रही थी कि बाबा है....सबका प्यारा बाबा है... बाबा सदा साथ रहेगा। बाबा ने मुझमें अथाह शक्ति भर दी थी। मैं सब जगह फोन कर रही थी। मैं कहती थी– ड्रामा की भावी, ड्रामा याद है, बाबा अव्यक्त हो गये। जो भी आना चाहे भले पधारे। कोई भी आँसू न बहाये, बाबा तो अभी भी हमारे साथ है। बाबा ने हाथ में हाथ देकर मेरी हिम्मत बढ़ा दी थी। मैं अडोल थी। मुझे यह संकल्प मात्र भी नहीं आ रहा था कि ''क्या हो गया'' या ''अब क्या होगा।'' मेरी दिल भी नहीं भरी, मेरे नयन भी नहीं भरे थे। मुझे पूर्ण विश्वास था कि हमारी पढ़ाई तो अन्त तक चलती रहेगी। अव्यक्त बाबा का प्रथम बार सन्देशी के तन में आना हुआ। बाबा ने दीदी दादी को यज्ञ की पूर्ण ज़िम्मेदारी दी। बाबा ने हम दोनों के सिर पर कलश रखा। अव्यक्त बाबा ने सन्देश दिया था—''बच्चे फिक्र न करो, बाबा तुम बच्चों के लिए वतन में तैयारी करने गया है। मेरा प्यारा बच्चा मेरे पास है। बाबा ने स्वयं को गुप्त कर शक्तियों को प्रत्यक्ष करने के लिए ये पार्ट बजाया है। ये बोल मेरे कानों में गूँजते रहते थे।'' इस प्रकार यज्ञ रूपी जहाज में अनेक वत्सों को बैठाकर 33 वर्षों से जहाज को अनेक तूफानों और विघ्नों के बीच सुरक्षित रखकर, जो नाविक असीम साहस के साथ, अडोलता पूर्वक चला आ रहा था, अब वह हमारे हाथों में जहाज की बागडोर देकर, हमारा पूर्ण सहयोगी बनने के लिये उड़कर वतन में जा बैठा ताकि सभी बच्चे अपना अधिकार लेकर ही जाएं।अपनी पवित्रता की स्थिति के बारे में तो यही कहूँगी कि जैसे शुरू से ही बाबा ने मुझे सम्पूर्ण पवित्रता का वरदान दे दिया है। मुझे अपना जीवन पूर्णतया वरदानी लगता है।

निंदा करने... पेज 12 का शेष

... जा रहे प्रयासों में ब्रह्माकुमारीज़ संस्था भरपूर योगदान डालेगी। मुख्य अतिथि निरमाग्रुप के अध्यक्ष करसन भाई पटेल ने कहा कि धन और शक्ति से प्राप्त होने वाला सुख कभी स्थायी नहीं हो सकता। सच्ची सुख-शांति प्राप्त करने के लिए आत्मा को जानना और उस पर लगे अज्ञान के आवरण को हटाना ज़रूरी है। 'अदानी फाउंडेशन' की मैनेजिंग ट्रस्टी प्रीति अदानी ने कहा कि पिछले 78 वर्षों से ब्रह्माकुमारीज़ संस्था सुख-शांतिमय समाज के निर्माण की अलख अनवरत रूप से जगा रही है। वे मानव के भटकते मन को सुमन बनाने का कार्य बखूबी कर रही है। आत्मा की सत्य पहचान की खोज करके सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सकता है। वर्तमान संचार क्रांति के माध्यम से सब कुछ जानने का दावा करने वाला मनुष्य अपनी असली पहचान भूले बैठा है। देश और दुनिया की यात्रा के साथ अंतरमन की यात्रा भी करनी चाहिए। बच्चों को बौद्धिक कौशल की नहीं, बल्कि आध्यात्मिक कौशल की अधिक आवश्यकता है। आध्यात्मिकता के अभाव के कारण बच्चों का सम्पूर्ण विकास अवरुद्ध होता है। विश्व नवनिर्माण के लिए ब्रह्माकुमारीज़ का प्रयास उत्तम माना जाएगा। संस्था के महासचिव ब्र.कु.निर्वैर व गुजरात जोन निदेशिका ब्र.कु.सरला ने भी उपस्थिति को संबोधित किया। विभिन्न कला अकादमियों के युवा कलाकारों ने देशभक्ति व आध्यात्मिकता से परिपूर्ण प्रस्तुतियों से मन मोह लिया। जब गुजरात का गरबा नृत्य प्रस्तुत किया गया, तो हज़ारों की संख्या में उपस्थित दर्शक झूम उठे। अतिथियों को ढ़ोलक की थाप और बैंडबाजे के साथ सभा स्थल पर ले जाया गया। समारोह में पहुँचने से पहले दादियों ने केक काटा और ज्योति प्रज्वलित करके 5 मंजिला भवन का उद्घाटन किया।

OM 19 a_Page 1 and 2 26/12/2014 12:50 PM Page 9

कथा सरिता

दया व क्षमा के साथ शिक्षा

संत तिरुवल्लुवर जुलाहा थे। वे प्रतिदिन तैयार कपड़ा बाज़ार में लाया करते और उसे बेचकर अपनी आजीविका चलाते। एक दिन एक युवक बाज़ार में संत के पास पहुँचा। संत की विनम्रता और साधुता को ढ़ोंग समझ उसने परीक्षा लेने की सोची। एक साड़ी उठाकर उसने दाम पूछा। संत ने मूल्य एक रुपया बताया। युवक ने उसके दो टुकड़े कर दिए और फिर से उसका दाम पूछा। संत ने दाम आठ आना बता दिया। उसने कपड़े के फिर से दो टुकड़े कर दिए और एक का दाम पूछा। संत ने शांत चित्त से चार आने बता दिया।

इस प्रकार उस युवक ने कपड़े के टुकड़े-टुकड़े कर दिए और उसका मूल्य भी नगण्य होता चला गया। संत फिर चुप हो गए। युवक ने अपना धन प्रदर्शित कर दो रुपये देते हुए कहा-यह रहा तुम्हारे कपड़े का मूल्य। संत की आँखों में आँसू आ गए। वे बोले-भाई, जब तुमने साड़ी खरीदी ही नहीं, तो मैं उसका मूल्य कैसे ले सकता हूँ? युवक को भी पश्चाताप होने लगा। तब संत बोले-बेटा, ये दो रुपये क्या उस मेहनत का मूल्य दे सकते हैं जो इस साड़ी में लगी है? इसके लिए किसान ने सालभर खेत में पसीना बहाया है। मेरी पत्नी ने उसे कातने और धुनने में दिन-रात एक किए। मेरे बेटे ने उसे रंगा और मैंने ताने-बाने पर उसे साड़ी का रूप दिया।

यह सुनते-सुनते उस युवक की आँखों में आँसू छलक आए। उसने संत से क्षमा मांगी और भविष्य में इस प्रकार का व्यवहार किसी से न करने की प्रतिज्ञा ली। युवक ने अंत में पूछा-आप मुझे पहले ही रोककर यह बात कह सकते थे, फिर आपने ऐसा क्यों नहीं किया? संत ने जवाब दिया-यदि मैंने तुम्हें पहले ही रोक दिया होता, तो तुम्हारा संशय पूरी तरह से नष्ट न होता और तुम शिक्षा को यथेष्ठ तरीके से आत्मसात नहीं कर पाते। दया और क्षमा के साथ दी गई शिक्षा व्यक्ति को बदलकर रख देती है और उसका प्रभाव भी अचूक होता है।

एक क्षण ही पर्याप्त

एक डाकू साथियों के साथ रेगिस्तान में रहता था। वहाँ से व्यापार के लिए असबाब लेकर गुजर रहे व्यापारियों और राहगीरों के काफिलों को लूटना उसका पेशा था। उसकी यह आदत थी कि लूट के माल में जो चीज़ पसंद आती, वह उसे अपने लिए रख लेता और बाकी की सब वस्तुएं साथियों में बांट देता।

पेशे से लुटेरा होने के बावजूद वह धार्मिक व्यक्ति था और नियमित भगवान का स्मरण किया करता था। वह एक बार एक लड़की के प्रेम में पड़ गया। वे दोनों मिला करते और इस अवसर पर वह अक्सर अपनी प्रेमिका को तोहफे दिया करता। अमूमन तोहफे लूटे हुए माल से होते और इस प्रकार उनका प्रेम बढ़ता गया।

एक दिन जब वह लूट के माल में से सर्वश्रेष्ठ तोहफा लेकर प्रेमिका के पास पहुँचा तो रात हो चुकी थी और जिस कबीले में उसकी प्रेमिका रहती थी वहाँ कोई व्यक्ति उपासना कर रहा था। सरदार ने उस व्यक्ति को भगवान से प्रार्थना में कहते सुना-क्यों नहीं आया ऐसा वक्त ईमानवालों के लिए कि उनका दिल खुदा के खौफ से डरे।

डाकू के कानों में ये शब्द पड़ने भर की कमी थी कि उसे अपनी भूल मालूम हुई। मानो उस एक क्षण में यकायक उसे सारी ज़िन्दगी में किए गुनाहों का एहसास हो गया। उसका अंतर्मन उससे कहने लगा-बेगुनाहों को लूटने में सारी ज़िन्दगी बर्बाद कर दी, अब तो होश में आ जा और नेकी और बंदगी के रास्ते पर चल। डाकू ने उसी दिन से लूटपाट छोड़ दी। बाद में वह एक संत के रूप में भी प्रसिद्ध हुआ। मानव मन विविध अनुभवों को ग्रहण करने वाला होता है। वह क्रोध और हिंसा कर सकता है तो उसमें प्रेम और करुणा भी होती है। महत्वपूर्ण होता है जीवन को मिलने वाला मार्गदर्शन। समय पर मिली एक सलाह या संकेत मानव को दुष्ट से संत बना सकती है।

दुआ सर्व-कल्याणकारी हो

रब्बी इसाक, रब्बी नहमन के मित्र ही नहीं मार्गदर्शक भी थे। एक दिन नहमन ने अध्ययन के पश्चात् इसाक से स्वयं के लिए दुआ करने को कहा। रब्बी इसाक ने जवाब में एक कहानी सुनानी शुरु की। एक व्यक्ति किसी रेगिस्तान में यात्रा कर रहा था। उसके पास भोजन समाप्त हो गया, तभी उसे वहाँ एक पेड़ दिखाई दिया। जिस पर पके हुए फल लगे थे। उसने उस पेड़ के मीठे और रसीले फल खाए और वहीं छांव में आराम करने लगा। नींद से उठकर उसने पेड़ के नीचे एक जलस्त्रोत से पानी पिया। उसने बेहतर महसूस किया और बोला-मैंने जीवन में ऐसे मधुर फल नहीं खाए। जब मेरे प्राण संकट में थे तब इस वृक्ष ने मुझे भोजन और आराम करने के लिए आश्रय दिया। मैं कैसे अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करूँ? क्या दुआएं दूँ? रब्बी इसाक, नहमन से बोले-क्या उस आदमी को यह दुआ करनी चाहिए कि उस वृक्ष के फल और मीठे हों? यह मूर्खता होगी क्योंकि उसके फल वह पहले ही चख चुका है। यदि यह दुआ दे कि तुम और अधिक छायेदार बनो तो वह पहले ही उसकी छाया में आराम कर चुका है और यदि वह यह कहे कि तुम्हारी जड़ों के पास जलस्त्रोत बना रहे, तो वह भी मौजूद है।

रब्बी नहमन ने पूछा-आप ही बताएं कि उस पेड़ को क्या दुआ दूँ? रब्बी इसाक ने कहा-मेरे मित्र, तुम्हें यह दुआ करनी चाहिए कि सभी पेड़ इस वृक्ष के समान कल्याणकारी बनें और यही बात तुम पर भी लागू होती है। मैं तुम्हारे लिए क्या दुआ करूँ? तुम्हें ज्ञान की दुआ दूँ तो वह तुम्हारे पास मौजूद है। धन का आशीर्वाद दूं तो वह भी तुम्हारे पास है। तुम्हें बाल-बच्चों की दुआ दूं तो तुम्हें पहले से ही बच्चे हैं। हाँ मैं यह दुआ करता हूँ कि तुम्हारे बच्चे तुम्हारी तरह ही बड़े हों और वे भी दूसरों के कल्याण के लिए कार्य करें। दुआ किसी के लिए सुख की कामना मात्र नहीं है, वह तो कल्याण भाव के विकास की प्रार्थना होती है।

सज्जनता का प्रभाव सूक्ष्म

एक राजा को कोई असाध्य बीमारी हो गई। वैद्यों को बताया तो उन्होंने रोग को कोढ़ बताया। कई निदान बताए गए, लेकिन किसी से कोई असर होते न दिखा। राजवैद्य ने कहा-महाराज, इस रोग का एक ही इलाज है। यदि आप राजहंस के मांस का भक्षण करें तो इस बीमारी से मुक्ति पा सकते हैं। राजहंस को पाना आसान न था। किसी जानकार ने बताया कि वे तो मानसरोवर में पाए जाते हैं, वहाँ कोई विरला साधु-संत ही जा पाता है।

कुछ साधुओं से राजा को धर्म का स्वरूप बताकर कुछ राजहंस ले आने के लिए कहा गया, लेकिन कोई भी इसके लिए तैयार न हुआ। अंत में एक बहेलिया साधु का भेष धारणकर मानसरोवर जाकर राजहंस लाने के लिए राजी हुआ।

मानसरोवर में राजहंस साधु-संतों से घुले-मिले थे। वे न किसी से भयभीत होते थे, न अजनबियों को देख दूर भागते थे। बहेलिये ने बिना किसी प्रयत्न के बहुत से राजहंसों को पकड़ लिया और उन्हें राजा के सामने प्रस्तुत कर दिया।

राजहंसों का सहज स्वभाव देख राजा के मन पर भारी प्रभाव पड़ा। उसने सोचा जो जीव संतों के प्रभाव से इस तरह अहिंसा में प्रतिष्ठित हो गए हैं कि उन्हें अपने घातक शत्रु से भी भय नहीं लगता, खुद की मृत्यु के भय से उन्हें मारना कितना बेतुका है। उसने राजहंसों को मुक्त कर दिया।

यह देखकर बहेलिये के मन पर भी भारी प्रभाव पड़ा। उसने सोचा राजहंसों के स्वभाव से प्रभावित हो राजा अपने रोग के निदान हेतु हिंसा से विरत हो गया, वे राजहंस उसके झूठे संतवेश के प्रभाव से ही निर्भय हो गए, वह संत भाव यदि वास्तव में उपलब्ध हो जाए तो कितना शांतिकारक होगा। बहेलिया सब कुछ त्यागकर जंगल चला गया और साधु बन गया।

संत स्वभाव की महिमा ऐसी ही है। ज्ञानी-मानी, पंडित-मूढ़ ही नहीं पशु-पक्षी तक उससे अप्रभावित नहीं रह पाते। वे संपर्क में आने वाले हर जीव में आमूल परिवर्तन कर देते हैं।

सोनई-राहूरी। महाराष्ट्र के राज्यपाल महामहिम सी.विद्यासागर राव '7 बिलियन एक्ट्स ऑफ गुड्नेस' के संकल्प पत्र पर हस्ताक्षर करते हुए। साथ हैं ब्र.कु. उषा तथा ब्र.कु. दीपक।

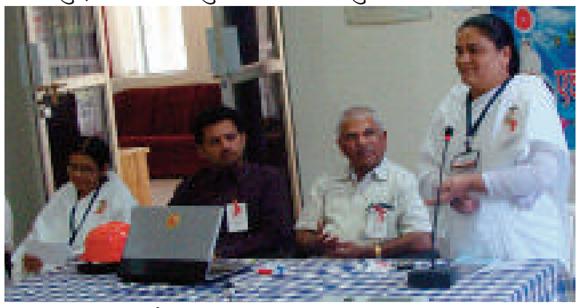

तासगांव। अंतर्राष्ट्रीय एड्स जागृति दिवस पर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. डॉ. वैशाली। साथ हैं प्लांट मैनेजर पी.मांगीलाल तथा अन्य।

दुर्ग-छ.ग.। चैतन्य देवियों की झाँकी का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए आर. संगीता,कलेक्टर, अमित शांडिल्य,केन्द्रीय जेल अधीक्षक, ब्र.कु. रीटा तथा अन्य।

नागपुर-महा.। 'सात अरब सत्कर्मों की महायोजना' का उद्घाटन करते हुए धर्मपाल अग्रवाल,प्रतिष्ठित व्यवसायी तथा समाजसेवी, राजीव घटोले,डिस्ट्रिक्ट कंट्रोलर,एस.टी. महामंडल, डॉ. शिव स्वरूप,रिजनल डायरेक्टर,इंदिरा गांधी ओपेन यूनिवर्सिटी, गोपाल बोहरे,सभापति, महानगरपालिका, ब्र.कु. रामप्रकाश सिंघल तथा ब्र.कु. पुष्पारानी।

पिंपरी-पुणे। 'गृहस्थ जीवन में परमार्थ कैसे करें' विषय पर सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. सरिता।

मांडवी-कच्छ। सोशल वुमेन्स ग्रुप द्वारा आयोजित कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त करते हुए ब्र.कु. उषा। मंच पर उपस्थित ग्रा.पं. सरपंच प्रभा पटेल, कांग्रेस महिला प्रमुख दमयंती गुसाई, जिवदया महिला ग्रुप प्रमुख रेश्मा शाह, बाग महिला अग्रणी मीना नाकर, राजगोर महिला मंडल प्रमुख शिल्पा नाथाणी।

एक कालजयी व्यक्तित्व

भारत की भूमि देवदूतों से भरी पड़ी है। मैं ये नहीं कहता कि रामकृष्ण परमहंस, विवेकानंद या दयानंद सरस्वती या अन्यानेक आत्माएं महान नहीं थीं। महान थीं और चिरकाल तक उनका नाम भी इतिहास में अमर है और रहेगा। लेकिन एक ऐसा व्यक्तित्व जिसने अपनी सम्पूर्ण संतति, संतान व सम्पत्ति को एक सेकेण्ड में विश्व कल्याणार्थ समर्पित कर अपना नाम उन देवदूतों में लिखवाया जिनसे सृष्टि की शुरुआत होती है। प्रत्येक धर्म में कोई न कोई धर्म का प्रथम पुरोधा अवश्य होता है जो उस धर्म की शुरुआत करता है। जब भी उसकी जीवनी लिखी जाती है तो सर्वप्रथम उसका नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित होता है। ऐसे ही सनातन धर्म के मसीहा, पुरोधा, चिरकाल तक अपने जीवन को सबके श्रीमुख पर लाने वाले व्यक्तित्व का नाम दादा लेखराज है।

प्रथम विश्व युद्ध की त्रास के पश्चात् अंग्रेज प्रशासन काल में जब भारत जकड़ा हुआ था, उस समय चारो तरफ अकाल, भूखमरी व प्राकृतिक आपदाओं का माहौल था, वैसे समय में एक परा-शक्ति ने सिंध हैदराबाद (जोकि अब पाकिस्तान में है) के एक जौहरी को परख कर मानव कल्याणार्थ निमित्त बनाया। उस काल में धर्म पतन की अवस्था की ओर अग्रसर था। लोग अपना सबकुछ शांति व सदभाव के लिए देने को आतुर थे। ऐसे समय में ही दादा लेखराज को उस परम-शक्ति ने निमित्त बनाकर ब्रह्मा नाम दिया और कहा कि मैं तुम्हारे द्वारा ही सृष्टि परिवर्तन का कार्य करूंगा। जिन्हें ग्रंथों में कहीं आदिदेव, एडम, आदम आदि नाम दिये गए हैं जो कयामत के समय ही परमात्मा के वाहन बनते हैं।

कैसा था उनका व्यक्तित्व?

निराकार, ज्ञान के सागर, सर्वशक्तिमान परमपिता ने जिस आदिदेव को अपना रथ बनाया वो अद्भुत था, अनुपम था, अद्वितीय था। अगर इसकी महिमा की जाये तो उसके लिए शब्द भी कम पड़ जायेंगे। हम सभी उन्हें प्यार से ब्रह्मा बाबा भी कहते हैं। जिन्होंने अपनी सहज तपस्या व त्याग के बल से कर्मातीत अवस्था को प्राप्त किया। उनकी कुछ विशेषताएं प्रमुख हैं

1. ब्रह्मा बाबा सदैव अपने आप में निश्चय रखते थे और साथ ही अपने सभी कार्य को परमात्मा के निमित्त करते थे इसलिए उन्हें किसी बात की कोई चिंता नहीं होती थी।

2. किसी भी परिस्थिति में सदा समर्थ संकल्प में रहते थे। उनको हमेशा ये रहता कि हमारा पिता हमारा रक्षक है इसलिए हमारा बाल भी बांका नहीं हो सकता।

3. वो सदैव अपने आप को व दूसरों को सम्मान देते थे। वो हमेशा इस स्वमान में रहते कि मैं एक मन पसंद, लोक-पसंद व प्रभु-पसंद आत्मा हूँ।

4. उन्होंने अपनी कर्मेंद्रियों पर सम्पूर्ण विजय प्राप्त कर ली थी। वो किसी भी परिस्थिति में डिगे नहीं।

5. चारो ओर हंगामा होते हुए भी वो एक के अंत में खोये रहते थे, एकांतवासी बन एकाग्रता का प्रबल अभ्यास करते थे।

6. अपना सम्पूर्ण जीवन देने के पश्चात् भी उन्हें इस बात का बिल्कुल अभिमान नहीं था कि मैंने कुछ त्याग किया।

7. अपनी शक्तिशाली वृत्ति से उन्होंने वायुमण्डल को अति शक्तिशाली बना दिया। इसका आधार उन्होंने परस्पर एक-दूसरे को आत्मा देखने के साथ जोड़ा। अपने सम्पूर्ण लौकिक को अलौकिक में परिवर्तन कर दिया।

8. ब्रह्मा बाबा किसी को उठाने के लिए सदा कहा करते कि आपके अंदर ये विशेषता है और ये भी विशेषता है। अगर आपके अंदर ये विशेषता भी जुड़ जाये तो कितना अच्छा होगा। इससे स्वत: ही सबकी कमी दूर हो जाती है।

9. ब्रह्मा बाबा कहा करते थे कि

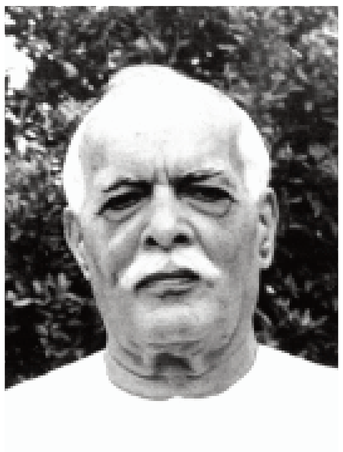

अहंकार आने का दरवाज़ा एक शब्द है 'मैं'। जब भी मैं शब्द याद आये तो याद करो कि मैं एक निराकारी आत्मा हूँ तो इससे आपका 'मैं' या अहंकार नष्ट हो जायेगा।

10. ब्रह्मा बाबा ने मातृशक्ति को सबसे ऊपर रखा। परमात्मा द्वारा दिया गया संदेश सबसे पहले माताओं को दिया या यों कहें कि नारी-सशक्तिकरण की शुरुआत अगर किसी ने की, तो वे ब्रह्मा बाबा थे। ऐसे कालजयी व्यक्तित्व को सम्पूर्ण सृष्टि की तरफ से शत-शत नमन।

-ब्र.कु. अनुज,दिल्ली

खुशियाँ आपके साथ...

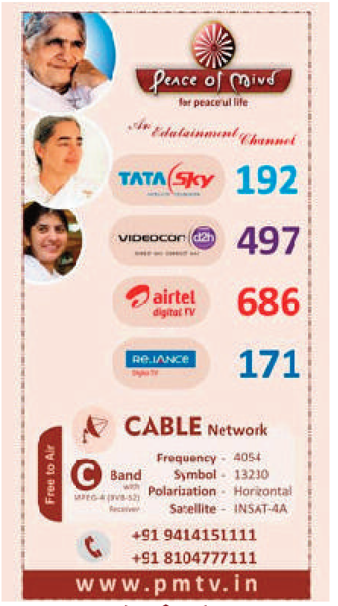

7 कदम राजयोग की ओर...

मन की बातें

-ब्र.कु. सूर्य

प्रश्न:- मैं 40 वर्षीय अधर कुमार हूँ। 5 वर्ष से ज्ञान-योग का अभ्यास करता हूँ, परंतु मुझे क्रोध बहुत आता है। मैं क्रोध छोड़ना चाहता हूँ, पर छूटता नहीं इसलिये मुझे डिप्रेशन भी होने लगा है। मैं खुश नहीं रहता। मुझे कोई ऊपाय बताइये?

उत्तर:- ये बहुत ही अच्छी बात है कि आपको अपने क्रोध का एहसास है और आप उससे मुक्त होना चहते हैं। क्रोध हमारे तन और मन के लिए बहुत ही नुकसानकारक है। क्रोध अंतत: डिप्रेशन में ही बदल जाता है। क्रोधी व्यक्ति धीरे-धीरे निर्बल हो जाता है। क्रोध सचमुच मनुष्य के लिए अभिशाप है। अपनी भावनाओं को कंट्रोल करने के लिए आप सवेरे अवश्य उठें और अपने मन का सुंदर संकल्पों से श्रृंगार करें। संकल्प किया करें कि मैं तो एक महान आत्मा हूँ। क्रोध मुझे शोभा नहीं देता। स्वयं भगवान मुझे कितनी ऊँची नज़र से देखता है। जब मुझे क्रोध आता है तो उसे कैसा लगता होगा? मुझे तो संसार को शांति का दान देना है। भला मैं सबके मन में क्रोध की अग्नि कैसे जला सकता हूँ? इस प्रकार के विचारों से आपको आत्म-जागृति होगी।

ऐसे ही सवेरे के समय विश्वास के सहित 5 बार याद करना कि मैं विजयी रत्न हूँ... मायाजीत हूँ... क्रोधमुक्त हूँ... मेरा चित्त शांत हो गया है...इससे आपको क्रोध को जीतने में बहुत मदद मिलेगी। इसके साथ-साथ आधा घण्टा योग करेंगे इस स्वमान के साथ कि मैं शांत स्वरूप हूँ...प्रेम से भरपूर हूँ...। क्रोध को धैर्य से जीता जाता है। आपके मन में जो तुरंत उत्तेजित होने का संस्कार है, उस पर आप अवश्य ध्यान दें। कुछ भी बात हो जाए, 10 सेकेण्ड धैर्यता के बाद प्रतिक्रिया दें, कुछ बोलें। और कोई कुछ भी बोलता है, गलत करता है, सर्वप्रथम आप मुस्कुराया करो। बस ऐसा करने से आपका चित्त शांत हो जाएगा और आप अपने जीवन का सम्पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे।

प्रश्न:- मैं 17 वर्षीय कुमारी हूँ। पहले मेरी एकाग्रता बहुत अच्छी थी। पर अब पढ़ाई में मेरी एकाग्रता बहुत कम हो गयी है। अभी मेरी 12वीं की परीक्षा होने वाली है। मैं इसमें बहुत अच्छे अंक लाना चाहती हूँ। मुझे समझ में नहीं आता कि मेरी एकाग्रता क्यों खत्म हो गई है और अब मैं क्या करूँ? मैं खुद को परवश सा पाती हूँ?

उत्तर:- आपका महत्वपूर्ण साल है। आपको एकाग्रचित्त होकर अपनी पढ़ाई पर फोकस करना चाहिए। परंतु आजकल इस आयु के अनेक बच्चों को ऐसा ही कड़वा अनुभव हो रहा है कि चाहते हुए भी वो एकाग्र नहीं हो पाते । इसका सूक्ष्म कारण हम यहाँ लिख रहे हैं – एकाग्रता में ये तीन चीज़ें तो बाधक हैं हीं – मोबाइल, टी.वी. और इन्टरनेट का गलत प्रयोग। साथ में बहुत लोगों से रिलेशनशिप बनाने से भी एकाग्रता नष्ट हो जाती है, परंतु आज-कल इसका एक सूक्ष्म कारण और भी है और वो है – हर युवक के अंदर बढ़ी हुई कामुकता। चारो ओर वातावरण में भी काम वासना के प्रकम्पन हैं। वो भी युवकों की एकाग्रता को भंग कर रहे हैं।

आपको प्रतिदिन कई बार पानी को चार्ज करके पीना है। उसकी विधि अपनायेंगे – गिलास में पानी लेकर उसे दृष्टि देते हुए 7 बार याद करें कि मैं परम पवित्र आत्मा हूँ। फिर पानी पीयें। दूसरी बात, अश्लील चीज़ें पढ़ने और देखने से बचें। मोबाइल आदि का कम प्रयोग करें। तीसरा, अपनी एकाग्रता को बढ़ाने के लिए राजयोग का अभ्यास करें। सर्वप्रथम ये याद करें कि मैं आत्मा स्वराज्य अधिकारी हूँ। मन-बुद्धि और संस्कारों की मालिक हूँ। इस देह और कर्मेन्द्रियों की मालिक हूँ। अपने को आत्मिक स्वरूप में देखें और अपने मन-बुद्धि से बात करें – हे मेरे मन, अब तुम शांत रहो...तुम बहुत भटके हो...इससे तुम्हारी शक्तियाँ नष्ट हो गयी हैं...अब शांत हो जाओ तो तुम बहुत शक्तिशाली बन जाओगे। अपनी बुद्धि से बात करें - हे मेरी बुद्धि, तू तो मेरी सच्ची मित्र है। अब जो कुछ मैं पढ़ूँ, तू उसे साथ-साथ याद कर लिया कर। कुछ ही दिनों में आपको अनुभव होने लगेगा कि मन-बुद्धि आपकी बात मानने लगे हैं और आपकी एकाग्रता में वृद्धि होने लगेगी।

प्रश्न:- मैं माता हूँ। मेरी लड़की 12वीं क्लास में पढ़ती है, वह हमारा बिल्कुल नहीं सुनती। उसने अपना एक बॉयफ्रेन्ड बना लिया है। वह सबकुछ छोड़कर उसी के साथ जाना चाहती है, हमने उसे बहुत मारा-पीटा भी, परंतु उस पर कोई असर नहीं हुआ। हमारे घर का माहौल बहुत बिगड़ गया है, मैं क्या करूँ?

उत्तर:- कलयुग के इस अंतकाल में सारे ही संसार में युवकों के मानसिक स्तर में काफी गिरावट आ गयी है। उनके अंदर की वासनाओं ने उनको भी बहुत परेशान कर दिया है। ना चाहते भी वो किसी की ओर खिंचे चले जाते हैं। उन्हें अपने परिवार वा लोक-लाज की चिंता नहीं। कभी–कभी वो खुद को परवश भी पाते हैं। आप अपनी लड़की के साथ क्रोध से नहीं, अति प्रेम से व्यवहार करो। प्रेम से तो विषधर को भी वश में किया जा सकता है। उसे प्यार से बैठाकर आप दोनों माता-पिता पहले उसके स्वमान को जगाओ कि तुम तो बहुत अच्छी हो। हमारे कुल की दीपक हो। फिर उसे बहुत प्यार से ये बात स्पष्ट करो कि ये प्यार तो इमोशनल होता है। आज वो लड़का तुमसे प्यार करता है, कल किसी और से करेगा। फिर अभी तो तुम्हारे पढ़ने की उम्र है। अभी उसे प्यार देकर उसके चित्त पर शीतल छींटे डालो, उसे अपने प्यार की रस्सियों में बाँधो।

इस पूरे वातावरण को ठीक करने के लिए आधा घण्टा सवेरे और आधा घण्टा शाम विशेष रूप से योगाभ्यास करो। योग से पहले इस स्वमान का अभ्यास करें कि मैं परम पवित्र आत्मा हूँ और योग में बाबा से पवित्र किरणें लेते हुए अपने पूरे घर में फैलायें। इससे उस आत्मा का चित्त भी शांत होगा। साथ ही साथ अपनी समस्या प्रभु-अर्पण भी कर दो तो आप उसके मदद के पात्र बन जाएंगे। आप अपने मन को शांत करें, पॉज़ीटिव करें तब आपकी बच्ची का मन भी शांत हो जाएगा। आपका व्यवहार उसके भी क्रोध व जिद को समाप्त करेगा। हमें विश्वास है कि आपका ये केयर बहुत जल्दी सबकुछ ठीक कर देगा।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

OM 19 a_Page 1 and 2 26/12/2014 12:50 PM Page 11

श्रेष्ठ कर्म के प्रणेता 'ब्रह्माबाबा'

यों तो सबसे बड़ा विघ्न, ऊँचे लक्ष्य पर दृढ़ न होना व उसे प्राप्त करने में अलबेलापन ही है। परंतु कई योगी ऐसी अवस्था प्राप्ति की इच्छा रखते हुए भी अपने सामने एक दीवार अनुभव करते हैं। वह दीवार क्या है? जो कभी-कभी तो उन्हें दिखाई भी नहीं पड़ती और यदि दिखाई देती भी है तो उसकी सुंदरता को देखकर वे उसे तोड़ना नहीं चाहते।

यह विशेष विघ्न या दीवार है-स्वार्थ की। जीवन में स्वार्थ की कहानी बड़ी लम्बी होती है। पग-पग पर प्रत्येक मनुष्य पहले स्वार्थ का ही ध्यान रखता है, इसे ही ध्यान में रखकर वह कोई काम करता है या निर्णय लेता है। हम सब या तो लौकिक कार्यों में व्यस्त हैं या अलौकिक कार्यों में। दोनों में ही हमारा स्वार्थ हमें बंधन में बांधता है। यदि कोई मनुष्य अपने सूक्ष्म स्वार्थ को महसूस करके इस बंधन को तोड़ दे तो वह तेज़ी से कर्मातीत अवस्था की ओर बढ़ सकता है। हमें कर्मातीत होने के लिए सर्व प्रकार के बंधनों से मुक्त होना है। तो आओ, हम देख लें कि बंधन हैं कौन-कौन से, जिनसे हमें मुक्त होना है। और हम यह भी याद रखें कि इन बंधनों के जाल हमने ही बनाये हैं अत: इनसे मुक्त होना हमारे लिए कठिन कार्य नहीं है।

बंधन व उनसे मुक्ति

जैसे यदि किसी मनुष्य को रस्सी से बांध दिया जाए तो वह कुछ भी नहीं कर सकता। वह परवश हो जाता है। इसी प्रकार प्रत्येक मनुष्यात्मा अनेक बंधनों में बंधी है। हमें पहले ज्ञान-बल से अपने बंधन खोलने हैं, फिर योगाग्नि में उन्हें जला देना है।

तो पहला बंधन है-मन का बंधन। मनुष्य चाहता है तीव्र पुरुषार्थ करना परंतु मन उसे करने नहीं देता। व्यर्थ, हीन, निराशात्मक व कमज़ोर विचार बार-बार मन को अपने अधीन कर लेते हैं। ज्ञान-बल से विचारों को महान व शक्तिशाली बनाकर हम इन बंधनों से मुक्त बनें।

दूसरा बंधन है-व्यर्थ बोल व व्यर्थ कर्मों का बंधन... व्यर्थ व विस्तार के बोल बोलकर, मनुष्य निरंतर अपनी शक्ति को नष्ट करता है। उसे भूल जाता है कि योगी बोल का रस नहीं लेते, वे तो मौन का रस लेते हैं। तो हम चेक करें कि जो बोल हमने बोला या जो कर्म हमने किया, वह फल देने वाला है या निष्फल है। यदि निष्फल है तो उसका त्याग कर दें।

तीसरा बंधन है-तेरे-मेरे का... इस भावना से ही मनुष्य तनाव व परेशानी के बीज बोता है। इससे मुक्त होने के लिए बेहद की वृत्ति बनाने की आवश्यकता है।

चौथा बंधन है-स्वभाव, संस्कार का... पुराने स्वभाव-संस्कार भी मनुष्य को बरबस बांध लेते हैं। तो जैसे बाबा सदा ही अपने अनादि आदि संस्कारों के स्वरूप बनकर रहे, हम भी सदा इसी स्वरूप में रहें कि ये पुराने संस्कार मेरे नहीं, मेरे तो ये दिव्य संस्कार हैं। चाहते न हों और संस्कार कर्म करा दें-यह है बंधन और हमारे स्वभाव संस्कार हमें परेशान न करें-यह है बंधन-मुक्त की निशानी।

पाँचवा बंधन है-परिस्थितियों व व्यक्तियों के प्रभाव का बंधन... बड़ा ही जटिल बंधन है यह। परिस्थिति व व्यक्ति हमारी स्थिति को डगमग न करें-यह है बंधन-मुक्त की निशानी। स्व-स्थिति व स्वमान से परिस्थितियों पर विजयी बनें व आत्मिक वृत्ति व मेरे-पन के त्याग से मनुष्यों के प्रभाव को समाप्त करें।

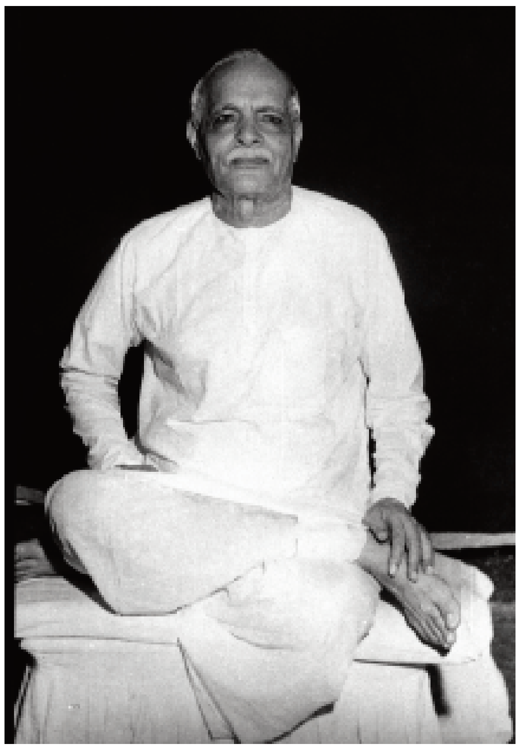

जैसे यदि किसी मनुष्य को रस्सी से बांध दिया जाए तो वह कुछ भी नहीं कर सकता। वह परवश हो जाता है। इसी प्रकार प्रत्येक मनुष्यात्मा अनेक बंधनों में बंधी है। हमें पहले ज्ञान-बल से अपने बंधन खोलने हैं, फिर योगाग्नि में उन्हें जला देना है।

छठा बंधन-प्रकृति का बंधन... पहली प्रकृति है हमारा शरीर। शरीर की व्याधि हमें बंधन न लगे, नीचे न लाए, हमें दु:खी या परेशान न करे, यह है इस बंधन से मुक्ति। व्याधि पुरुषार्थ को रफ्तार दे, इसके लिए व्याधि का चिन्तन न हो बल्कि स्वचिंतन व ईश्वरीय चिंतन हो। हमारे मुख से यह शब्द न निकले कि मैं बीमार था इसलिए पुरुषार्थ नहीं कर सका, बल्कि हम कहें कि हमारी व्याधि हमें कर्मातीत स्थिति के समीप ले आई। जैसे ब्रह्मा बाबा ने दिखाया-व्याधियों के समय वे अधिक मग्न थे, व्याधियों के प्रभाव से परे ईश्वरीय नशे में थे।

सातवां बंधन है-सेवाओं का... सेवा तो बंधन नहीं है, बंधन मुक्त होने का साधन है। परंतु कभी-कभी हम सेवा को बंधन बना देते हैं। सेवा में रॉयल इच्छाएं हमें बंधन में बांधती हैं। सेवा में स्वार्थ भी बंधन का कारण है। तो हमें याद रहे कि जो सेवा स्थिति को डगमग करे, कर्मातीत होने में विघ्न लगे वह यथार्थ सेवा नहीं। सेवा का बल हमारी स्थिति को आगे बढ़ाता है, हमें आनंदित करता है व मायाजीत बनाता है। तो हम देख लें कि कोई सेवा हमें कर्मातीत बनने में बंधन तो नहीं है। जैसे पिताश्री सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी संभालते हुए भी सदा बंधन मुक्त रहे, वैसे ही सेवा की ज़िम्मेदारी हमें बंधन मुक्त बनाये।

आठवां बंधन है-पदार्थों का... पदार्थों की उलझन, उन्हें प्राप्ति की आकांक्षा, पुन: उन्हें उपयोग की उलझन मनुष्य को उलझाये रखती है। परंतु पदार्थ व वैभव हमें बंधन में न बांधें इसके लिए हम राजा जनक की एक कहानी याद करें। एक सन्यासी ने राजा जनक से पूछा कि राजन! आप तो महलों में रहते हैं, इतने पदार्थों का उपभोग कर रहे हैं, नाच-गाना, दास-दासी रखते हैं, आप कैसे योगी या विदेही हो सकते हैं? क्या आप इन सबमें लिप्त नहीं हैं? जनक ने उत्तर दिया-महात्मन् ''मैं महलों में रहता हूँ, परंतु महल मुझमें नहीं रहता, मैं वस्तुओं का उपयोग करता हूँ, परंतु वस्तुएं मेरा उपभोग नहीं करती।'' बस यही रहस्य है-अनासक्त होने का।

इस प्रकार स्वयं को हम चेक करें कि कर्मातीत होने में हमारे मार्ग में अब कौन-सा विघ्न है, बंधन है। उन्हें काटकर हम शीघ्र ही मुक्त बनें। इन सभी बंधनों को वैराग्य की तलवार से सहज ही काटा जा सकता है। सम्पूर्ण विश्व को बंधन-मुक्त बनाने वाले भगवान के बच्चे होकर भी यदि हम बंधन युक्त रहे तो हमें भगवान के बच्चे कौन कहेगा?

बेहद का वैराग्य

जिन्होंने पिताश्री जी को देखा, वे जानते हैं कि प्रारंभ से ही उनका मन पूर्ण विरक्त, वैराग्य से भरपूर था। यह वैराग्य किसी स्थूल घटना पर आधारित नहीं था। इसका आधार ईश्वरीय अनुभव था, यह वैराग्य ज्ञान-युक्त था। इसलिए आदि से अन्त तक उनके वैराग्य में कमी नहीं आई। कोई भी वैभव, प्राप्तियां या सेवा का विस्तार उनके वैराग्य को कम नहीं कर पाया।

इसी महान वैराग्य की नींव पर वे महान त्यागी, महान तपस्वी व सम्पूर्ण बंधन-मुक्त बने।

हमें भी ज्ञान-युक्त होकर बेहद का वैराग्य धारण करना है। वैराग्य मन को स्थिर करता है, वैराग्य उपराम वृत्ति बनाता है, वैराग्य सभी शौक समाप्त कर केवल ईश्वरीय मिलन का शौक उत्पन्न करता है। वैराग्यवान व्यक्ति ही अपने मन, बुद्धि व संस्कारों पर राज्य कर सकता है। अब समय समीप आ रहा है, घर जाने के दिन समीप आ रहे हैं, तो आसक्तियां व अनुराग क्यों? अब हमें चाहिए कि मन को पूर्ण विरक्त करें, जहाँ-जहाँ भी यह आसक्त हो, वैराग्य वृत्ति से इसे उपराम करें, तब ही हम समय से पूर्व कर्मातीत हो सकेंगे।

तो आओ... हम सभी ब्रह्मा वत्स अपने माननीय व परम पूज्य पिताश्री जी से प्रेरणा लेकर बेहद का वैराग्य धारण करें, उनके पद-चिन्हों पर चलकर कर्मातीत अवस्था की ओर बढ़ें। पिताश्री जी की भी यही श्रेष्ठ आशा है। उन्हें याद करते हुए हम सच्चे मन से उनकी आशाओं को पूर्ण करने का संकल्प करें। तब ही हम उनके महान व योगी वत्स कहलायेंगे, तब ही हममें, संसार उनका स्वरूप देख सकेगा और लोग मुक्तकंठ से गान करेंगे...

''शिव के रथी तूने जग में कर दिया कमाल''

-ब्र.कु. सूर्य, माउण्ट आबू

आलन्द। 'शान्ति सद्भावना महोत्सव' के दौरान मंचासीन तालुका पंचायत अध्यक्षा प्रभावती दगे, के. रायपरेड्डी,बी.ई.ओ., डॉ काशीनाथ बिरादार,प्रिंसीपल,गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज, ब्र.कु. प्रेम,माउण्ट आबू, ब्र.कु. विजया, अन्य बहनें तथा बच्चे।

सांपला-हरियाणा। 'एक शाम शिव पिता के नाम' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए महंत कालिदास महाराज, समाजसेवी प्रदीप नांदल, ब्र.कु. संतोष, ब्र.कु. ललित तथा अन्य।

जाँजगीर। खोखरा जेल में आयोजित राजयोग शिविर में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. रेणु। साथ हैं ब्र.कु. कविता, ब्र.कु. सुभद्रा व अन्य।

बुलन्दशहर-उ.प्र.। चैतन्य देवियों की झाँकी में उपस्थित ब्र.कु. नीलम, ब्र.कु. रचना तथा अन्य।

भरतपुर। सेवाकेन्द्र में आने पर मिलान शेथ,अर्थशास्त्री,यू.के., के.डी. स्वामी,उपकुलपति,महाराजा सूरजमल ब्रज विश्व विद्यालय, श्रीमती के.डी. स्वामी तथा उनके पुत्र को प्रदर्शनी समझाते हुए ब्र.कु. प्रवीणा।

डी.एल.एफ.-गुड़गांव। आध्यात्मिक कार्यक्रम में दीप प्रज्वलन करते हुए कमल शर्मा,एम.डी.,सैलवन पॉलिस्टर लि., ब्र.कु. सावित्री, आर.पी. सिंह,फॉर्मर एम्बैसेडर ऑफ कोरिया, ब्र.कु. अनुसुइया, ब्र.कु. शुक्ला, रंजना बहन,प्रिन्सीपल,एच.टी.पब्लिक स्कूल, वेद पाल यादव,ट्रान्सपोर्टर तथा ब्र.कु. रमेश।

OM 19 a_Page 1 and 2 26/12/2014 12:50 PM Page 12

नैतिक मूल्यों से आता है अहिंसा का भाव - न्यायमूर्ति

ओ.आर.सी.-गुड़गांव। शिक्षा में आध्यात्मिकता एवं नैतिक मूल्यों के समावेश से ही समाज में अहिंसा का भाव जागृत हो सकता है। इसके लिए सबसे पहले हमें स्वयं में परिवर्तन लाना बहुत ज़रूरी है। उक्त विचार देश के सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश, पी.सी.घोष ने गुड़गाँव, बोहड़ा कलां, ओम शान्ति रिट्रीट सेंटर के 14वें वार्षिक उत्सव के अवसर पर इन्टरपैथ विषय पर व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि हमें पहले स्वयं के ही अंदर देखना है कि मेरे में क्या है, जब हम स्वयं के भीतर के गुणों को महसूस करते हैं तो परिवर्तन आसानी से होता है।

संस्कारों का निर्माण होगा मातृशक्ति के सम्मान से

महामण्डलेश्वर स्वामी धर्मदेव महाराज, हरि मंदिर आश्रम, पटौदी ने अपने सम्बोधन में कहा कि उन्होंने कहा कि अगर हमें समाज को अहिंसक बनाना है तो इसके लिए हिंसा की प्रवृत्ति को उत्पन्न करने वाले मूल को ही नष्ट करना होगा।सबसे पहले हमारे समाज में मातृशक्ति का सम्मान होना चाहिए, जिससे कि बच्चों में अच्छे संस्कार पैदा हों। सारे विश्व में अगर प्राणी मात्र का

इन्टरपैथ विषय सेमिनार का आयोजन

भला किसी ने चाहा तो वो भारत ही है, सर्वे भवंतु सुखिन: ये हमारा एक संदेश है। डॉ.लोकेश मुनि, अहिंसा विश्व भारती, आचार्य लोकेश आश्रम ने कहा कि वास्तव में आज हिंसा एक बहुत बड़ी समस्या है, इसका समाधान तभी हो सकता है जब हम प्रारंभ से ही शिक्षा में मूल्यों की शिक्षा पर ज़ोर देंगे। आज परमार्थ का स्थान स्वार्थ ने ले लिया है। हमें स्वार्थ से ऊपर उठना होगा।

ई. आइ. मालेकर,प्रीस्ट ने कहा कि समाज को अहिंसक बनाने के लिए हमें महिलाओं पर किए जा रहे अत्याचारों को रोकना होगा। परमात्मा ने मानव को अपनी छवि में बनाया है, जो गुण परमात्मा में हैं वही गुण मानव के अंदर हैं। जिन्हें पुन: जागृत करने की आवश्यकता है। हैदराबाद उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश एवं अनुसूचित जाति आयोग के चेयरपर्सन वी. ईश्वरैय्या ने कहा कि जब से मैं ब्रह्माकुमारीज़ के सम्पर्क में आया, मेरे जीवन में एक अभूतपूर्व परिवर्तन आया। उन्होंने कहा कि परमात्मा सर्वव्यापी नहीं है, बल्कि वो तो परमधाम का रहवासी है, परमात्मा हम मनुष्यों के सदृश्य जन्म नहीं लेता। परमात्मा परकाया प्रवेश करके हम मनुष्यात्माओं को ज्ञान देते हैं। वर्तमान समय ये ईश्वरीय विश्व-विद्यालय परमात्मा द्वारा दी जा रही शिक्षाओं से मनुष्य मात्र के कल्याण के लिए कार्य कर रहें है। महामण्डलेश्वर स्वामी

सर्वानंद सरस्वती, महाशक्तिपीठ ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि मैं काफी समय से ब्रह्माकुमारीज़ के सम्पर्क में हूँ, ये एक ऐसी संस्था है जो सिर्फ देना जानती है। हिंसामुक्त समाज के लिए सबसे पहले आहार की शुद्धि बहुत ज़रूरी है, आहार से ही हमारे व्यवहार का निर्माण होता है, वाणी में मिठास आती है। हिमाचल प्रदेश से आये चेमगन केन्टिग ताइ सितुपा ने कहा कि अहिंसक समाज के निर्माण में दया, विनम्रता एवं मधुरता जैसे गुण बहुत ज़रूरी हैं। उन्होंने कहा कि अहिंसक समाज की स्थापना के लिए शिक्षा के क्षेत्र में आध्यात्मिकता का समावेश बहुत ज़रूरी है। इस दिशा में ब्रह्माकुमारीज़ का प्रबंधन बहुत ही उच्च स्तरीय कार्य कर रहा है, जिसमें कोई

कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. आशा। साथ हैं न्यायाधीश पी.सी.घोष तथा वी. ईश्वरैय्या।

संदेह व दिखावा नहीं है।रामकृष्ण मिशन से आये सुनील कुमार ने कहा कि हमारा ये समाज हिंसा से मुक्त था, ये तो हमारे इतिहास में भी वर्णन है, जिस रामराज्य की हम कल्पना करते हैं वो एक ऐसा ही समाज रहा है। डॉ. ए.के.मर्चेंट, लोटस मंदिर के नेशनल ट्रस्टी ने कहा कि अहिंसक समाज के निर्माण के लिए हमारे विचारों में मौलिक परिवर्तन ज़रूरी है। ओ.आर.सी. की निदेशिका ब्र.कु.आशा ने बताया कि परमात्मा के सिवाय इस संसार को हिंसामुक्त कोई नहीं बना सकता। उन्होंने कहा कि जब परमात्मा ने सृष्टि रची तो वो सम्पूर्ण अहिंसक थी जिसे हम स्वर्ग कहते हैं, जहाँ के बारे में गायन है कि शेर और बकरी दोनों एक ही घाट पर जल पीते थे। लेकिन धीरे-धीरे वो समय बदल गया और ये समाज हिंसा प्रधान हो गया। इसका मूल कारण आत्मिक स्वरूप की विस्मृति होने के कारण मानव देह-अभिमान वश हिंसा उसके जीवन का एक हिस्सा बन गई। उन्होंने कहा कि हिंसा सिर्फ किसी को मार देना ही नहीं बल्कि काम वासना के वश होकर जब मनुष्य कुकृत्य करता है, वो भी हिंसा है।

जहां होता मन साफ, वहां होता ईश्वर का वास

कार्यक्रम के दौरान राज्यपाल मृदुला सिन्हा को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. शोभा।

पणजी (गोवा)। घर-आंगन के साथ मन व बुद्धि की स्वच्छता भी होनी चाहिए। स्वच्छ मन में ही सभी के लिए शुभ भावना रहती है और वहाँ पर ईश्वर का वास भी होता है। ये विचार पणजी की राज्यपाल महामहिम मृदुला सिन्हा ने ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित 'स्वच्छ भारत अभियान' के उद्घाटन अवसर पर व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि अपने हाथों पर काबू रखें और गंदगी को दूर करें। राज्यपाल के साथ ब्रह्माकुमारीज़ ने स्वच्छता के लिए झाड़ू हाथ में लेकर स्वच्छ भारत मुहिम की शुरुआत की। श्रीमती सिन्हा ने कहा कि छोटे-बड़े सभी में स्वच्छता के विषय पर जागृति आ रही है यह बहुत अच्छी बात है। बाह्य स्वच्छता के साथ साथ सकारात्मक चिंतन, सकारात्मक व्यवहार ज़रूरी है।पणजी की ब्र.कु. शोभा ने कहा कि स्वच्छ भारत की कल्पना को साकार करके भारत को विश्वगुरू बनाने के स्वप्न को साकार करने की ज़रूरत है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री जी के 'स्वच्छ भारत अभियान' में ब्रह्माकुमारीज़ के युवकों द्वारा मदद मिली है। अगर मन भी स्वच्छ होगा तो इस धरती पर स्वर्णिम भारत का निर्माण होगा। इस अवसर पर राज्यपाल ने सभी से प्रतिज्ञा करायी कि हफ्ते में कम से कम दो घंटे सफाई कार्य के लिए देंगे व दूसरों को भी इसमें शामिल करने की प्रेरणा देंगे।

निंदा करने वाला कभी सुखी नहीं हो सकता: दादी

अहमदाबाद। ब्रह्माकुमारीज़ के कांकरिया स्थित सुख-शान्ति भवन का उद्घाटन उत्साह एवम् उमंग भरे वातावरण में हुआ। संस्था की 99 वर्षीय मुख्य प्रशासिका दादी जानकी ने फुटबॉल मैदान में उमड़े जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि जीवन में स्थायी सुख-शांति प्राप्त करने के लिए अवगुणों से मुक्ति पाकर गुणवान बनना होगा। किसी की निंदा करने वाला या दुख देने वाला व्यक्ति कभी सुख-शांति प्राप्त नहीं कर सकता। सच्चा इंसान जो सभी को सम्मान देता है, वही भगवान के गले का हार बनता है। कड़वा बोलना सबसे बड़ा अवगुण है। इसलिए जीवन में मधुरता धारण करके स्वयं सुखी हों और दूसरों को सुखी बनाएं। उन्होंने कहा कि सरला बहन द्वारा रोपित पौधा अब वटवृक्ष बन चुका है। अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका दादी हृदयमोहिनी ने कहा कि प्राचीन भारत की गरिमा बहाल करने के लिए किये - **शेष पेज 8पर**

दादी जानकी व दादी हृदयमोहिनी के साथ केक कटिंग करते हुए ब्र.कु. मोहिनी, ब्र.कु. सरला, ब्र.कु. करसन भाई व अन्य।

कार्यालय- ओम शान्ति मीडिया, संपादक- ब्र.कु.गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आबू रोड (राज.)- 307510
सदस्यता के लिए सम्पर्क- M - 9414006096, 9414182088, Email- mediabkm@gmail.com, omshantimedia@bkivv.org, Website- www.omshantimedia.info

सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक **190** रुपये, तीन वर्ष **570** रुपये, आजीवन **4500** रुपये । **विदेश - 2500** रुपये (वार्षिक)
कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

3 *-.&$. %).&0) / * "
&#)-#" .* +*-. 1 &0%/. +,#+ 2(#). *-.&$ *) 3 3)" 3 3 # !%(*).%+/ '&0%#" *) "#!

संपादक: ब्र.कु.गंगाधर, प्रकाशक: ब्र.कु.करुणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ) के लिए प्रकाशित एवं डी.बी.प्रिंट सॉल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित।